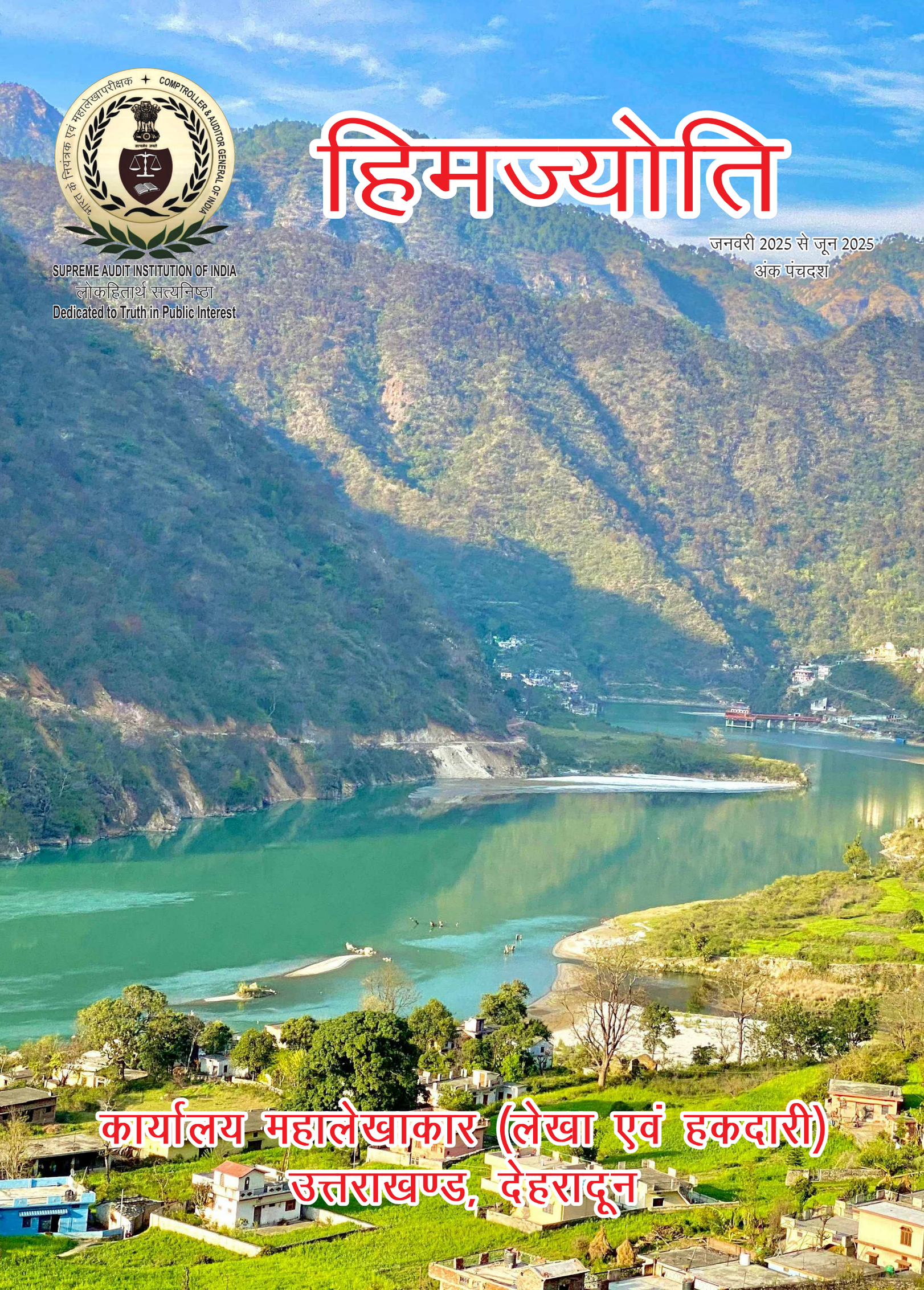


SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

हिमज्योति

जनवरी 2025 से जून 2025
अंक पंचदश

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) उत्तराखण्ड, देहरादून



चित्रकार श्री यशपाल सिंह
पिता–श्रीमती दीपा पंवार, सहा. लेखाधिकारी

जनवरी 2025 से जून 2025 | अंक – पंचदश
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) – उत्तराखण्ड, देहरादून



राजभाषा प्रतिज्ञा

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 और 351 तथा राजभाषा संकल्प 1968 के आलोक में हम, केंद्र सरकार के कार्मिक यह प्रतिज्ञा करते हैं कि अपने उदाहरणमय नेतृत्व और निरंतर निगरानी से; अपनी प्रतिबद्धता और प्रयासों से; प्रशिक्षण और प्राइज से अपने साथियों में राजभाषा प्रेम की ज्योति जलाये रखेंगे, उन्हें प्रेरित और प्रोत्साहित करेंगे; अपने अधीनस्थ के हितों का ध्यान रखते हुए; अपने प्रबंधन को और अधिक कुशल और प्रभावशाली बनाते हुए राजभाषा–हिन्दी का प्रयोग, प्रचार और प्रसार बढ़ाएंगे। हम राजभाषा के संवर्द्धन के प्रति सदैव ऊर्जावान और निरंतर प्रयासरत रहेंगे।

जय राजभाषा! जय हिन्दी



छायाकार – श्रीमती भावना यादव
लेखाकार (गुच्चुपानी)

सत्यमेव जयते



मो० परवेज़ आलम
महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
उत्तराखण्ड

संदेश

कार्यालय की हिन्दी गृह पत्रिका 'हिमज्योति' के पंद्रहवें अंक का प्रकाशन मेरे लिए बहुत हर्ष का विषय है। भारत विविधता से भरा देश है। यहाँ अनेक भाषाएँ बोली जाती हैं। भाषाएँ एक दूसरे से सीखती भी हैं और एक दूसरे को समृद्ध भी करती हैं। राजभाषा हिन्दी में भी यही विशेषता है कि भारत की विभिन्न भाषाओं को अपनाते हुए इसने स्वयं को समृद्ध बनाया है। आज हिन्दी विश्व में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है।

राजभाषा के विकास में कार्यालय की गृह पत्रिका 'हिमज्योति' एक छोटा–सा प्रयास है। पत्रिका में कार्यालय के कार्मिकों द्वारा अपने लेखन कौशल में मनोभावों को प्रकट करने का एक प्रशंसनीय प्रयास किया है। हिमज्योति कार्यालय के कार्मिकों की दैनिक गतिविधियों के इतर उनके साहित्यिक एवं रचनात्मक लेखन प्रतिभा को हिन्दी में अभिव्यक्त करने का एक सशक्त मंच प्रदान करती है। पत्रिका में प्रकाशित की जाने वाली रचनाएँ राजभाषा के प्रति कार्मिकों की भाषायी संवेदनशीलता व भावनात्मकता को दर्शाती है, साथ ही कार्यालय के दायित्वों को पूरा करते हुए एक अतिरिक्त गतिविधि के लिए समय निकालना हमारे कार्मिकों के समय प्रबंधन की उत्कृष्टता दर्शाता है।

मैं आशा करता हूँ कि हिमज्योति का यह अंक राजभाषा के विकास के क्रम में विशेष योगदान देगा। अंत में मैं पत्रिका के संपादक मण्डल सहित सभी रचनाकारों तथा पत्रिका में किसी भी रूप में अपना योगदान सुनिश्चित करने वाले कार्मिकों को बधाई देता हूँ तथा आशा करता हूँ कि कार्यालय के सभी कार्मिक राजभाषा हिन्दी के प्रति निष्ठावान रहते हुए अपने कार्यालयीन कार्यों में हिन्दी भाषा के शत–प्रतिशत प्रयोग को सुनिश्चित करेंगे।

संरक्षक एवं निदेशक



छायाकार—श्री सौरभ राना
लेखाकार (चम्पावत)

सत्यमेव जयते



श्री लोकेश दताल
वरि. उपमहालेखाकार (प्रशासन एवं निधि)

प्रधान संपादक की...

बड़े हर्ष का विषय है कि कार्यालयीन पत्रिका का पंद्रहवां अंक प्रकाशित हो रहा है। हिमज्योति पत्रिका के प्रकाशन में अब तक कार्यालय के कार्मिकों व उनके परिवारजनों ने बढ़–चढ़ कर प्रतिभाग किया है, चाहे वह बच्चों की चित्रकला के रूप में हो या फिर किसी साहित्यिक रचना के रूप में हो । जहां साहित्य को एक तरफ समाज का दर्पण माना जाता है वहीं दूसरी तरफ साहित्य मनुष्य को उसके दैनिक कार्य की एकरसता और नीरसता से इतर नवीन परिवेश में ले कर जाता है जिससे उसका मन जीवन के कोमल पहलुओं से परिचित होता है। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए कार्यालय में पत्रिका प्रकाशित करने की योजना का सृजन हुआ और हिमज्योति के रूप में एक साहित्यिक भेंट हमें प्राप्त हुई।

पत्रिका के लेख जहां विभिन्न तकनीकी, सामाजिक एवं सांस्कृतिक जानकारियों से पूर्ण होकर हमें समसामयिक घटनाओं व तथ्यों से परिचित कराते हैं वहीं कहानियाँ, कविताएँ, गजलें व चित्रकारियाँ हमारी कलात्मक व्यंजना को अनुभूत करवाती हैं। इसी कड़ी में कार्यालय में होने वाली अन्य प्रतियोगिताओं व कार्यक्रम के चित्र इन्हें सदैव के लिए सहेज कर रखने में योगदान देते हैं। हमारी कार्यालयीन पत्रिका 'हिमज्योति' राजभाषा हिन्दी की इस यात्रा को अविरल चलाये रखने में एक सांकेतिक लेकिन महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। कार्यालय परिवार ने पत्रिका के प्रत्येक अंक में अपना योगदान देकर राजभाषा हिन्दी के प्रति अपनी निष्ठा का परिचय दिया है।

मैं संपादक मंडल को धन्यवाद देता हूँ कि उन्होंने भाषा और साहित्य के संवर्धन हेतु इतना सशक्त और जीवंत मंच प्रस्तुत किया। साथ ही सभी लेखकों व रचनाकारों को इस बात के लिए साधुवाद देता हूँ कि वे अपने भावों, विचारों और अनुभवों के माध्यम से राजभाषा हिन्दी की समृद्ध परंपरा को आगे बढा रहे हैं।

आशा करता हूँ कि हिमज्योति आगे भी इसी रचनात्मकता, गुणवत्ता तथा विचारशीलता से भरे मनोभावों के साथ प्रकाशित होती रहेगी।

लोकेश दताल

प्रधान संपादक



छायाकार–श्री मयंक मथेला
लेखाकार (मसूरी)

सत्यमेव जयते



श्री सुभाष चन्द्र ममगाँई,
उपमहालेखाकार (लेखा एवं वी.एल.सी.)

संपादकीय

मुझे अत्यंत हर्ष की अनुभूति हो रही है कि हमारे कार्यालय की हिन्दी गृहपत्रिका हिमज्योति का पंद्रहवां अंक प्रकाशित किया जा रहा है। इस पत्रिका ने अपनी सतत साहित्यिक यात्रा में जिस प्रकार उत्कृष्ट भाषाई सौंदर्य तथा विभिन्न वैचारिक आयामों को समेटा है, वह निःसन्देह ही सराहनीय है। विशेष रूप से लेखकों और रचनाकारों ने अपनी लेखनी से इस मंच को समृद्ध किया है। आपकी रचनाएँ पाठकों की सोचने, समझने और समाज से जुड़ने का अवसर प्रदान करती है।

भारत विविधताओं से भरा हुआ देश है, जिसके हर प्रांत में लगभग अलग भाषा और बोलियाँ बोली जाती हैं, जो देश को सांस्कृतिक विभिन्नता प्रदान करते हैं तथा हमारी अनोखी संस्कृति को और भी अनुपम बनाते हैं, इससे हमारा समाज सांकृतिक रूप से समृद्ध होता है। इन सभी प्रांतों में बोली जाने वाली अलग–अलग भाषा एवं बोलियों में सामंजस्य के लिए एक ऐसी भाषा का होना आवश्यक है जिसे बोलने में सभी सक्षम हों अथवा कम से कम इसे समझना सभी के लिए आसान हो, इसी स्थान पर हिन्दी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है विभिन्न भाषा–भाषायी लोगों के मध्य एक सरल, सुगम संवादीय पुल के रूप में। पत्रिका में प्रकाशित होने वाली रचनाएँ हिन्दी के प्रति कार्मिकों की भाषायी संवेदनशीलता व भावनात्मक्ता को दर्शाती है।

मैं पत्रिका के सभी रचनाकारों व प्रकाशन संबंधी संपादक मण्डल के सदस्यों का आभार व्यक्त करता हूँ साथ ही आशा करता हूँ कि भविष्य में भी 'हिमज्योति' पत्रिका ऐसे ही पुष्पित–पल्लवित होती रहेगी।

संपादक



छायाकार–सुश्री ज्योति रानी समाद्दार
कनिष्ठ अनुवादक (देवलसारी)

सत्यमेव जयते



सुश्री पूनम शर्मा,
सहायक निदेशक (राजभाषा)

संदेश

हर्ष और गर्व का विषय है कि हिमज्योति पत्रिका का यह पंद्रहवां अंक प्रकाशित हो रहा है। यह न केवल एक संख्या है, बल्कि उस रचनात्मक यात्रा का प्रतीक है जिसमें प्रत्येक अंक में साहित्य, संस्कृति, विचार और संवेदना को शब्दों से संजोया है। यह पत्रिका मात्र लेखन की अभिव्यक्ति नहीं बल्कि विचारों, अनुभवों और मूल्यों को साझा करने का एक जीवंत माध्यम बन चुकी है। हिमज्योति ने इन वर्षों में यह सिद्ध किया है कि यदि प्रतिबद्धता, गुणवत्ता और सामूहिक प्रयास हो तो किसी भी रचनात्मक मंच को ऊँचाईयों तक पहुँचाया जा सकता है। हिमज्योति के इस अंक में सम्मिलित किये गये चित्र, विभिन्न रचनाएँ, लेख, कविताएँ आदि निश्चित ही पाठकों को आकर्षित करेंगे।

हिन्दी केवल एक भाषा नहीं बल्कि हमारे विचारों, संस्कारों और सांस्कृतिक धरोहर की संवाहिका है। ऐसे समय में जब भाषा को केवल कामकाजी जरूरत तक सीमित रखने की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है तब हिमज्योति जैसी पत्रिकाएँ युवा पीढ़ी को राजभाषा हिन्दी की गरिमा और उपयोगिता से जोड़ने का एक महत्वपूर्ण साधन बन सकती है।

आज के समय में जब डिजिटल माध्यमों के प्रभाव से साहित्यिक अभिव्यक्तियाँ बदल रही हैं तब हिमज्योति जैसे प्रयास यह सिद्ध करते हैं कि छपे शब्दों का सौंदर्य और गंभीरता आज भी अपना महत्व रखती है।

मैं आशा करती हूँ कि हिमज्योति आने वाले अंकों में भी इसी प्रकार ऊर्जा से भरपूर पठनीय और प्रेरक सामग्री के साथ प्रकाशित होती रहेगी। मैं ईश्वर से प्रार्थना करती हूँ कि हिमज्योति ज्ञान, सृजन और संवेदना की इस यात्रा में सदैव आगे बढ़ती रहे।

हिमज्योति संपादक मण्डल



बैठे हुए (बायें से दायें) – श्री लोकेश दताल, वरि. उपमहालेखाकार (प्रशासन एवं निधि)– प्रधान संपादक
मो० परवेज़ आलम, महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) उत्तराखण्ड– संरक्षक एवं निदेशक
श्री सुभाष चन्द्र ममगाँई, उपमहालेखाकार (लेखा एवं वी.एल.सी.)– संपादक

खड़े हुए (बायें से दायें) – श्री अरविन्द सिंह रावत, लेखाकार– सहायक संपादक
श्री नवीन त्रिपाठी, सहायक लेखाधिकारी– सलाहकार संपादक
श्री शिवम लिल्हौरी, लेखाकार– सहायक संपादक

पत्रिका परिवार

संरक्षक एवं निदेशक

मो० परवेज़ आलम

महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) उत्तराखण्ड

प्रधान संपादक

श्री लोकेश दताल

वरिष्ठ उपमहालेखाकार (प्रशासन एवं निधि)

संपादक

श्री सुभाष चन्द्र ममगाँई,

उपमहालेखाकार (लेखा एवं वी0एल0सी0)

सलाहकार संपादक

श्री नवीन त्रिपाठी

सहायक लेखाधिकारी

सहायक संपादक

श्री शिवम लिल्हौरी, लेखाकार

एवं

श्री अरविन्द सिंह रावत, लेखाकार

साज–सज्जा

श्री शिवम लिल्हौरी

लेखाकार

टंकण

श्री दीपक उज्जवल

आँकड़े प्रविष्टि संचालक

आवरण पृष्ठ एवं पार्श्व पृष्ठ

कल्यासौड़ में अलकनंदा नदी के तट का मनोरम दृश्य

कालसी में स्थित अशोक का सिंहचतुर्मुख स्तम्भशीर्ष

(रचनाकारों के विचारों से संपादक मण्डल की सहमति आवश्यक नहीं है।)

प्रशंसा पत्र

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित वार्षिक हिन्दी ई–पत्रिका 'हिमज्योति' के चतुर्दश अंक की ई–प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका का यह अंक भेजने हेतु आपका हार्दिक आभार। भेजी गई पत्रिका में संकलित सभी रचनाएँ पठनीय, रूचिकर एवं प्रेरणादायक हैं। इस पत्रिका में सामाजिक जीवन से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर प्रेरक एवं ज्ञानवर्धक लेख लिखे गये हैं। राजभाषा हिन्दी के प्रचार–प्रसार में यह पत्रिका महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। सभी रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएँ।

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)–छत्तीसगढ़

आपके कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'हिमज्योति' के चतुर्दश अंक की ई–प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में सभी रचनाएँ प्रशंसनीय हैं, विशेष तौर पर अंग्रेजी का मोह हिन्दी के विकास में बाधक, राजभाषा संबंधी ई–टूल्स, विश्वास की मुस्कान, हिन्दी का इतिहास एवं वर्तमान परिदृश्य, आदि रचनाएँ सारगर्भित एवं सराहनीय हैं। पत्रिका की साज–सज्जा उत्तम है। कार्यालयीन चित्रों ने पत्रिका की सुंदरता को और निखारा है। पत्रिका के कुशल तथा सफल संपादन हेतु संपादक मण्ड़ल को हार्दिक बधाई। पत्रिका के निरंतर उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएँ।

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा–II)–मध्य प्रदेश

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिन्दी गृह पत्रिका 'हिमज्योति' के चतुर्दश अंक की ई–प्रति प्राप्त हुई। सहर्ष धन्यवाद। इस अंक के आवरण पृष्ठ, साज–सज्जा एवं अन्य कार्यालयीन गतिविधियों से संबंधित छायाचित्र मनोरम एवं आकर्षक हैं। इस पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं उत्कृष्ट, मनमोहक एवं रोचक हैं। सभी रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय), मुंबई

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी गृह–पत्रिका 'हिमज्योति' की प्रति प्राप्त हुई है जिसे हम सहर्ष स्वीकार करते हैं। पत्रिका की साज–सज्जा और विन्यास अत्यंत आकर्षक बन पड़ा है जिसके लिए आपको साधुवाद। पत्रिका में सम्मिलित समस्त रचनाएँ अतीव ज्ञानवर्धक, प्रेरक और समयानुकूल तथा प्रासंगिक हैं। आगे, आपसे यही आशा करते हैं कि आप इसी प्रकार इस पत्रिका का प्रकाशन निरंतर जारी रखेंगे और राजभाषा हिन्दी के प्रचार–प्रसार को बढावा देने में अपनी महती भूमिका द्वारा सदैव सभी को अभिप्रेरित भी करते रहेंगे। इन्हीं कामनाओं के साथ संपादक मण्ड़ल सहित समस्त पत्रिका परिवार को धन्यवाद एवं बहुत–बहुत बधाई।

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)–त्रिपुरा

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी गृह–पत्रिका 'हिमज्योति' के चतुर्दश अंक की ई–पत्रिका की प्राप्ति हुई। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्र अत्यंत आकर्षक और मनमोहक हैं। साथ ही साथ पत्रिका का कलेवर भी अत्यंत आकर्षक है। कविताएं और लेख भी भावपूर्ण, सार्थक तथा मन को छू लेने वाली हैं। इनमें से जो रचनाएँ अति उत्तम लगीं वो हैं– मेरा परिवार, सखी, जीवन, अभयदान, विश्वास की मुस्कान तथा नज्म आदि। आशा करता हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उज्जवल भविष्य तथा आगामी अंकों के लिए बहुत–बहुत शुभकामनाएँ।

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा–II)– पश्चिम बंगाल

अनुक्रमणिका

क्रमांक	रचना	रचनाकार	विधा	पृष्ठ संख्या
1	घर की दीवारें	प्रशांत जोशी, वरि. लेखाकार	कविता	16
2	नज़्म	सुशील कुमार देवली, वरि. लेखाधिकारी	नज़्म	17
3	सम्पादन कला और कौशल	डॉ. दिनेश शर्मा, सहा. लेखाधिकारी	लेख	18–20
4	बनस्थली विद्यापीठ – एक सफर	पूजा त्रिपाठी	लेख	21
5	ऑपरेशन स्टडी	विक्रान्त कुमार, सहा. लेखाधिकारी	लेख	22
6	नज़्म	सुशील कुमार देवली, वरि. लेखाधिकारी	नज़्म	23
7	कृत्रिम बुद्धिमता और हिन्दी	शिवम लिल्होरी, लेखाकार	लेख	24–27
8	साथी	राजेश, बहुकार्यकर्मी	कविता	28
9	गाँव में सरकारी कर्मचारी की व्यथा	दीपक उज्जवल, आँ.प्र.सं.	लेख	29
10	ले चलो मुझे	शिवम सिंह, खण्डीय लेखाधिकारी	कविता	30
11	हिन्दी एवं भारतीय भाषाओं का स्वर्णिम काल	विनोद कुमार शर्मा, वरि. लेखाधिकारी (सेवानिवृत्त)	लेख	31–32
12	बहन जी	सत्य प्रकाश सिंह, सहा. लेखाधिकारी	लेख	33–34
13	मेरा विद्यालय	नव्या त्रिपाठी	कविता	35
14	जीना आ गया	विक्रान्त कुमार, सहा. लेखाधिकारी	कविता	36
15	रंग रूप	शिवम लिल्हौरी, लेखाकार	कविता	37
16	तनाव	बबीता, वरि. लेखाकार	लेख	38
17	तनहा	प्रशांत जोशी, वरि. लेखाकार	कविता	39
18	अपना सा	विक्रान्त कुमार, सहा. लेखाधिकारी	कविता	40
19	एक्सचेंज–ट्रेडेड फंड (ईटीएफ)	एस.जे.रॉय चौधरी, पर्यवेक्षक	लेख	41–42
20	आसमानी मछलियाँ	शिवम सिंह, खण्डीय लेखाधिकारी	लेख	43

घर की दीवारें



प्रशांत जोशी,
वरि. लेखाकार

अब कैद नहीं लगती
ये घर की दीवारें
ये तो मेरी हमसफर
बन गयी है
हर पल एक दूजे को
ये मुझे अपनी सी
लगने लगीं है
बेजान नहीं रही अब
ये घर की दीवारे
ये भी मेरे संग
साँस लेने लगीं है
देखती मुझे जब
दर्द से कराहते
मेरे पास आके
सहलाने लगी है
खामोश नहीं है अब
ये घर की दीवारें
देख मुझे तनहा तनहा
ये मुझसे बातें करने लगी है
आँखों में राते
गुजरते देख मेरी
ये मुझे लोरी
सुलाने लगी है।



नज़्म



सुशील कुमार देवली
वरि. लेखाधिकारी

जब भी ख्यालों के घर जाता हूँ,
खुद को भूल जाता हूँ..
अपने उसी पुराने शहर में
घूम आता हूँ पुराने गली मुहल्ले
सामने वाले मैदान में खेल आता हूँ गुल्ली डंडा..
यकायक बहुत छोटा बन जाता हूँ
ख्यालों के सहारे बचपन में पहुँच जाता हूँ मैं...



सम्पादन कला और कौशल



डॉ0 दिनेश शर्मा,
सहायक लेखाधिकारी

हिन्दी साहित्य के इतिहास में अनेक ऐसे व्यक्ति हुए, जिन्होंने सम्पादन के माध्यम से साहित्य और समाज को नई दिशा दी है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, महावीर प्रसाद द्विवेदी, जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', महादेवी वर्मा और सुमित्रानन्दन पंत ऐसे ही विशिष्ट व्यक्तित्वों में से हैं, जिन्होंने न केवल नई हिन्दी में साहित्यिक पत्रिकाओं के सम्पादन में उत्कृष्टता हासिल की बल्कि अपने सम्पादन कौशल से हिन्दी को समृद्ध किया। नई हिन्दी आधुनिक हिन्दी साहित्य की एक महत्त्वपूर्ण शाखा है। यह उन्नीसवीं सदी से लेकर आज तक के समय में विकसित हुई है। इस काल में हिंदी साहित्य ने कई महत्वपूर्ण परिवर्तन और विकास देखे हैं। इन परिवर्तनों की दिशा और दशा निर्धारित करने में अनेक पत्रिकाओं और इनके सम्पादकों के सम्पादन कौशल और सृजनात्मक दृष्टिकोण को आज भी प्रत्यक्ष देखा जा सकता है।

इन सभी ने आरम्भिक हिन्दी पत्रिकाओं और उस काल–खण्ड के शोध–आलेखों को जैसा सुगठित आकार दिया, वह उनके अत्यधिक व्यवस्थित, सूक्ष्म और गहरी समझ से हमें परिचित कराता है। हम यह भी पाते हैं कि उन लोगों ने अपने सम्पादकीय कार्यों के दौरान हमेशा साहित्यिक गुणवत्ता और सामाजिक जिम्मेदारी का सन्तुलन बनाए रखा। उनका लेखन और सम्पादन हमेशा पाठकों को एक नये दृष्टिकोण से परिचित कराता है।



एक अच्छे सम्पादक की तरह वे हमेशा अपने विषय को गहरे तरीके से समझने की कोशिश करते हैं, जिससे उनका सम्पादन न केवल सही और सटीक होता है, बल्कि उसमें एक विशिष्ट साहित्यिक गहराई भी परिलक्षित होती है।

वस्तुतः एक सम्पादक का कार्य केवल लेखों को संकलित या प्रकाशित करना नहीं होता, बल्कि उसका काम विचारों को परिष्कृत करना, सामग्री का चुनाव करना और पाठकों तक एक सशक्त, सुसंगत और प्रेरणादायक संदेश पहुँचाना होता है। सम्पादक के कार्यक्षेत्र की व्यापकता को एक अच्छे सम्पादक के निम्नलिखित महत्त्वपूर्ण गुण–धर्मों से समझा जा सकता है–

1. निष्पक्षता और ईमानदारी – एक सम्पादक को बिना किसी पक्षपाती दृष्टिकोण के लेखों का चयन और सम्पादन करना चाहिए। यह उसकी जिम्मेदारी होती है कि वह सभी लेखों को समान दृष्टिकोण से देखे और कोई भी लेख बिना किसी भेदभाव के प्रकाशित हो।

2. विचारशीलता और विश्लेषणात्मक क्षमता – सम्पादक को हमेशा विचारशील और विश्लेषणात्मक होना चाहिए ताकि वह लेखक के विचारों, भाषा और सन्दर्भ को सही ढंग से समझ सके। तभी लेखकों के विचारों को सही तरीके से प्रस्तुत किया जा सकेगा। विश्लेषणात्मक दृष्टि से ही अतिशयोक्ति, गलत जानकारी या भ्रामक तथ्य को अलग करना सम्भव होता है।

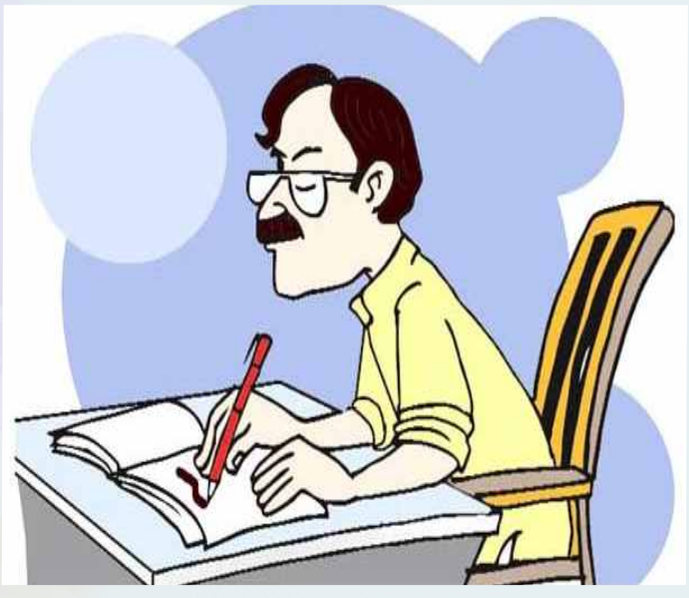
3. सामाजिक जिम्मेदारी – सम्पादन में समाज के प्रति नैतिक और सामाजिक जिम्मेदारियों का भी ध्यान रखना चाहिए। चूँकि साहित्य और मीडिया का समाज पर सीधा प्रभाव पड़ता है, इसलिए ऐसी सामग्री ही प्रकाशित की जानी चाहिए जो समाज को जागरूक, सकारात्मक और प्रगतिशील दिशा में मार्गदर्शन प्रदान करे।

4. रचनात्मकता और नवीनता – सम्पादक को हमेशा नवीन विचारों और रचनात्मकता को प्रोत्साहित करना चाहिए। वह लेखकों को नए दृष्टिकोण से सोचने और लिखने के लिए प्रेरित कर सकता है। पारम्परिक लेखन शैली से इतर नए विचारों, शैली और विषयों में सम्पादक की दिलचस्पी पत्रिका में हमेशा कुछ नया देखने का अवसर देती है।

5. सम्पादन कौशल और सूक्ष्म दृष्टिकोण – सम्पादक का कार्य लेखों में भाषा की अशुद्धियाँ, वर्तनी की गलतियाँ और व्याकरण संबंधी त्रुटियाँ ठीक करना होता है। साथ ही उसे लेख के विचारों में स्पष्टता और प्रवाह को सुनिश्चित करना होता है। इसके लिए रचना की भावनात्मक गहराई और तथ्यात्मक सटीकता पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए।

6. समय की पाबन्दी और दायित्वबोध – एक सम्पादक को समय के प्रति सख्त होना चाहिए। उसे निर्धारित समय सीमा में कार्य पूरा करना चाहिए, ताकि पत्रिका या समाचार पत्र की नियमितता बनी रहे।

7. समय के साथ बदलाव की समझ – एक अच्छा सम्पादक समाज और पाठकों की समय के साथ बदलती रुचियों को समझता है और पत्रिका या प्रकाशन के स्वरूप में आवश्यक बदलाव लाता है। उसमें यह समझने की क्षमता होती है कि समाज और पाठक समुदाय की बदलती सोंच और प्राथमिकताओं को कैसे अपनाना है।



8. लेखकों के साथ संवाद और सहयोग – एक सम्पादक का कार्य केवल लेखों का सम्पादन करना नहीं होता, बल्कि लेखकों के विचारों का सम्मान करना और उनकी रचनाओं में आवश्यक सुधार सुझाव देना भी एक अच्छे सम्पादक का महत्त्वपूर्ण कार्य होता है।

9. साहित्यिक और बौद्धिक विकास की दिशा में योगदान – एक सम्पादक को केवल सामग्री का सम्पादन नहीं करना होता, बल्कि उसे साहित्यिक और बौद्धिक क्षेत्र में अपने योगदान के रूप में कुछ स्थायी और उपयोगी कार्य भी करना होता है। उसे नए विचारों, विचारकों और लेखकों को प्रोत्साहित करने के साथ–साथ समाज में शिक्षा और संस्कृति के प्रसार में भी भूमिका निभानी चाहिए।

10. सहिष्णुता और खुला दृष्टिकोण – एक सम्पादक को विविध विचारों और दृष्टिकोणों के प्रति सहिष्णु होना चाहिए। उसे समालोचना के लिए खुला और रचनात्मक आलोचना के प्रति संवेदनशील होना चाहिए, ताकि वह लेखकों के विचारों को सुधारने और उन्हें सही दिशा में मार्गदर्शन करने में सक्षम हो सके।

इस प्रकार हम पाते हैं कि एक सम्पादक के गुण–धर्म केवल सम्पादन तक सीमित नहीं होते, बल्कि उसकी भूमिका साहित्य के साथ–साथ समाज के प्रति भी महत्त्वपूर्ण होती है। हिन्दी को ऐसे कालजयी सम्पादकों का सान्निध्य मिला जिन्होंने हमेशा न केवल युवा और नवोदित रचनाकारों को प्रोत्साहित किया, बल्कि उन्हें विचारशील और समृद्ध लेखन की दिशा में मार्गदर्शन भी दिया। उन्होंने बिखरे विचारों वाले लेखों में छिपी सम्भावनाओं को भी बाहर निकाला और हर रचना को एक बेहतर रूप दिया। वे लेखों में व्याकरण की गलतियाँ ठीक करने से लेकर, विचारों की स्पष्टता और प्रवाह को भी सुधारने में माहिर होते थे। यह उनका सम्पादन कौशल ही था जिसने उनकी पत्रिकाओं को न केवल पाठकों में लोकप्रिय बनाया अपितु वे आज भी उन्हें साहित्यिक जगत में भी उच्च स्थान पर रखता है। उदन्त मार्तंड' से लेकर 'बंगदूत' और 'प्रजामित्र' से आरम्भ इस परम्परा में राष्ट्र के प्रति प्रेम के साथ–साथ रचनात्मक दृष्टिकोण स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। फिर 'कवि वचन सुधा', 'भारत–मित्र', 'सरस्वती', 'मर्यादा', 'प्रताप', 'विशाल–भारत', 'हंस', 'मतवाला' और 'कर्मवीर' आदि से होते हुए हिन्दी पत्रिकाओं की यह उन्नत परम्परा स्वतंत्रता के बाद भी निरन्तर गतिमान रही और तब 'धर्मयुग', 'नई–कविता', 'ज्ञानोदय' और 'कथादेश' जैसी उत्कृष्ट पत्रिकाओं ने नूतन विचारों और नवीन शैलियों को प्रोत्साहित किया। जिससे इन पत्रिकाओं में हर बार काफी कुछ नया देखने को मिलता रहा।

'इन स्थापित और सफल पत्रिकाओं के पीछे सम्पादकों का अथक परिश्रम प्रेरक और प्रणम्य तो है ही, इससे यह भी पता चलता है कि रचनाकारों को पारम्परिक विषयों के साथ–साथ समकालीन मुद्दों और समाज के अन्य गहरे पहलुओं पर लिखने के लिए प्रेरित करने से पत्रिकाएँ केवल साहित्यिक दृष्टिकोण से ही नहीं, बल्कि सामाजिक जागरूकता और प्रगति के सन्दर्भ में भी महत्त्वपूर्ण बन जाती हैं।



बनस्थली विद्यापीठ – एक सफर



पूजा त्रिपाठी
पत्नी श्री नवीन त्रिपाठी,
सहायक लेखाधिकारी

राजस्थान के टोंक जिले (ग्रामीण क्षेत्र) जहाँ सन् 1935 में नवासी वर्षों पहले हीरालाल शास्त्री समाजसेवक एवं शिक्षाविद् और उनकी पत्नी श्रीमती रतन शास्त्री ने अपनी पुत्री शांताबाई की स्मृति में बनस्थली विद्यापीठ की नींव रखी। यह पूरे देश में एकमात्र पूर्ण आवासीय महिला डीम्ड विश्वविद्यालय है। यहाँ केवल देश ही नहीं बल्कि विदेशों से भी छात्राएं शिक्षा प्राप्त करने आती हैं। जहाँ राजस्थान जैसे राज्य में बेटियों का जीवन संघर्षपूर्ण था, बनस्थली विद्यापीठ एक आशा की किरण बनकर उभरा। यह बहुत ही सराहनीय एवम् साहसपूर्ण कदम था।

मैं एक साधारण परिवार से हूँ और मेरे पिताजी शहर से बाहर पढ़ाने के इच्छुक नहीं थे खैर, अपनी जगह वो भी ठीक थे। मेरे पिताजी के मित्र जो कि डॉक्टर (नेत्र विशेषज्ञ) हैं, के माध्यम से बनस्थली विद्यापीठ का पता चला और सौभाग्य से मैं सन् 2010–11 एवं 2011–12 सत्र में इसका हिस्सा बनी। उन अविस्मरणीय यादों को आपके साथ साझा करने जा रही हूँ। पहली बार शायद घर से इतनी दूर अकेले जाना नया अनुभव था जहाँ मोबाइल फोन का भी साधन नहीं था।



हॉस्टल के लैंडलाइन फोन में महीने में दो बार घर पर बात होती और घर जाने के लिए फैक्स (छुट्टी) आने का इन्तजार रहता था। थोड़ा समय लगा और बनस्थली भी अपने परिवार जैसा लगने लगा। सुबह उठते नियमित दिनचर्या, अध्यापकों, मित्रों और जीजी (वार्डन) के साथ समय कैसे बीत जाता पता ही नहीं चलता। इस दौरान जाने–अनजाने अनेक गुण मेरे अन्दर समाहित होते गए। बनस्थली परिसर में खादी की वेशभूषा तथा नीले कुर्ते, सफेद सलवार व दुपट्टे (यूनिफार्म) में अनगिनत सपने लिए भागती छात्राएं अपनी अलग पहचान रखती हैं। साधारण सी दिखने वाली छात्राएं अथाह ज्ञान एवं कौशल का भण्डार हैं।

कानपुर विश्वविद्यालय (कैंपस) से मैंने एम.एस.सी. किया और कई जाने–माने विश्वविद्यालयों के परिसर में भी गई, मित्र मण्डलीय चर्चा भी हुई परन्तु यहाँ की जीवन शैली अपने आप में अतुलनीय है तथा यहाँ की फीस एवं छात्रावास के खर्चे संतुलित हैं। बाकी पानी से भरा आधा गिलास किसी को आधा भरा तो किसी को खाली दिखाई देता है, यह हमारी सोंच और नजरिए पर भी निर्भर करता है।

ईश्वर की असीम कृपा से हमें भी दो बेटियां हैं और मैं इन्हें बनस्थली विद्यापीठ के वातावरण से जरूर रूबरू कराना चाहूँगी, बाकी मार्गदर्शन हमारा और चुनाव उनका होगा। यह सफर छोटा रहा परन्तु बहुत ही खुशनुमा एवं यादगार था। बनस्थली विद्यापीठ मेरे हृदय में था, है और ताउम्र रहेगा।

आपरेशन स्टडी



विक्रान्त कुमार,
सहायक लेखाधिकारी

पूर्व में आम तौर पर कार्यालय स्तर पर जो कार्य किये जाते थे, उनमें मुख्यतः पीछे देखो आगे चलो वाले कार्य सम्मिलित होते थे (ऐसा बताया जाता है)। मुख्यालय अथवा केंद्र सरकार की नीतियों के चलते पिछले कुछ वर्षों में इस प्रकार की कार्य शैली में अत्यधिक बदलाव आये हैं। मानव जीवन में एक सत्य बात यह भी है कि जो हमें सोते हुए जगा देता है तो हम उसका विरोध करने लगते हैं, नीतियों में बदलाव से जो लोग सोये हुए थे उन्हें अत्यधिक कठनाई होने लगी, सरकारी नौकरी का आनंद छिन सा गया, दुःख तो होगा ही।

कार्य शैलियों में बदलाव का असर कार्यालयों में स्पष्टतः परिलक्षित हो रहा है, 'बने रहो पगला काम करे अगला' नीति का पालन करने वाले लोगों को दिक्कतें होने लगी हैं। परन्तु इस तरह के लोग जल्दी नींद से जागेंगे नहीं, क्योंकि वो सोये हैं, सरकारी नींद है जल्दी खुलेगी नहीं। इन्होंने भी नया उपाय खोज लिया अपनी नींद को बचाने का, अब इन्हें बस कहना होता है कि श्रीमान यह कार्य हमें नहीं आता उसे (जो कार्य उचित प्रकार करते हैं) आता है।

सरकारी दफ्तरों की कार्य प्रणाली का एक संरचनात्मक ढांचा होता है, जिसमें अलग संकाय में विभिन्न अनुभाग सम्मिलित होते हैं। प्रत्येक अनुभाग का दायित्व अलग होता है एवं हर अनुभाग कार्यालय के उचित संचालन में अपना–अपना योगदान देता है।

मुख्यालय के उच्च अधिकारी ने पंचकुला में हुई सॉफ्ट स्किल के प्रशिक्षण के दौरान कहा था कि "यदि हम अपनी सेवाएँ अच्छी तरह नहीं दे पायेंगे तो वो सेवा का दायित्व हमसे कब छीन लिया जाएगा, हमें पता नहीं चलेगा"। इन शब्दों में एक सन्देश स्पष्ट है कि हमें नितदिन अपनी सेवाओं में सुधार की आवश्यकता है जिससे हम अपने विभाग को हर स्तर पर सौंपे गये दायित्वों के सापेक्ष सिद्ध कर सकें।



मुख्यालय के दिशा निर्देश तो सही हैं किन्तु इससे उन लोगों को अत्यधिक कार्य का दायित्व सौंप दिया जाता है जो अपना कार्य उचित प्रकार से करते हैं, इस प्रकार एक नए आपरेशन का जन्म होता है, जिसे 'आपरेशन स्टडी' कहना उचित होगा। आपरेशन स्टडी के नाम पर सही कार्य करने वाले कर्मचारियों को दूसरे अनुभागों के कार्य भी सौंप दिए जाते हैं। आज कल स्टडी एवं समिति के गठन का दौर अपने चरम पर है, पता नहीं कितनी समितियां एवं स्टडी चल रही हैं, परन्तु परिणाम लगभग शून्य प्रतीत होता है। इसका मुख्य कारण यह है कि दो चार सदस्यों को ही सब समितियों मे सम्मिलित किया जाता है। ये वही लोग हैं जो अपना काम लगन से करते हैं।

अब इस प्रकार की नीतियों का प्रभाव नौकरी पर आये नये लोगों पर भी पड़ता है, उनको भी 'बने रहो पगला काम करे अगला' वाली नीति सही प्रतीत होती है। उच्च अधिकारियों का ये मौलिक दायित्व बनता है कि वे सर्वप्रथम कार्यालय के संरचनात्मक ढाँचे को भालीभाँति समझ कर ही कार्यों के निर्वहन का निर्णय करे। आपरेशन स्टडी सही है परन्तु जिसका दायित्व है उसी को सौंपा जाए तो कार्यालय अपाहिज नहीं होगा, इसके सभी अंग सही प्रकार से कार्य करेंगे, ज्ञान सीमित नहीं होगा। कर्मचारियों एवं अधिकारियों को भी अपने कार्य के प्रति जागरूक होने की आवश्यकता है, हमें समझना होगा कि हो सकता है हमारा कार्यकाल कार्यों को टाल कर निकल जाएगा, परन्तु जरा सोचिये कि हम आने वाली पीढ़ी को क्या देकर जा रहे हैं, क्या आने वाली पीढ़ी के लिए सरकारी नौकरी बचेगी? इसके कई उदाहरण समाज में मौजूद हैं, कई विभागों को दूसरे विभागों में सम्मिलित करके समाप्त कर दिया गया, कई विभाग अपनी अंतिम साँसे ले रहे हैं। कारण एक ही है अपना दायित्व सत्यनिष्ठा से पूरा नहीं करना। अतः लेख के माध्यम से निवेदन है कि कार्यों को टालने या दूसरों पर थोपने के स्थान पर एक दूसरे से चर्चा करके कार्यों को पूर्ण करें।

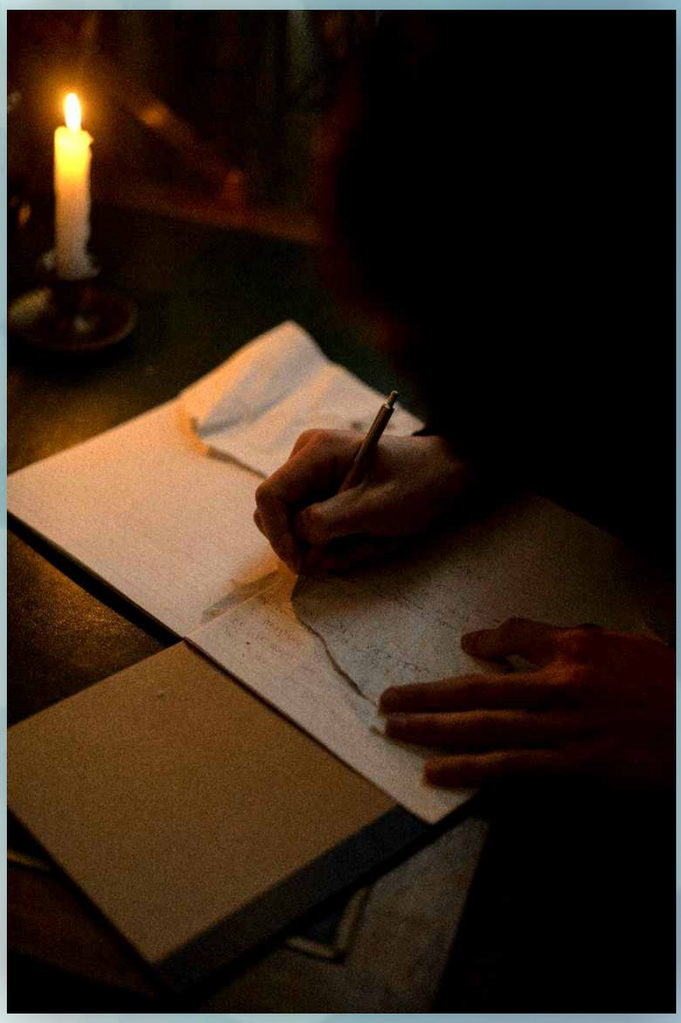
"जन–सेवा में ही है सच्चा मान
सरकारी कर्मी का यही विधान"

नज़्म



सुशील कुमार देवली,
वरि. लेखाधिकारी

ना कलम
ना कागज़ बतियाते हैं...
वो ज़माने गये जब अलफाज़
लिफ़ाफ़ों की लिबास पहन सफ़र किया करते थे....
किसी को खुशी तो किसी की
आँखें तर कर दिया करते थे...
लफज़ों के अब मिजाज़ बदल चुके हैं..
एक दानिशमंद बता रहा था...
कि वो भी अब डिजिटल हो चुके हैं.....



"कृत्रिम बुद्धिमता और हिन्दी"



शिवम् लिल्होरी "बानगी"
लेखाकार



"मैंने हाल ही में जी–20 शिखर सम्मेलन के दौरान ए. आई. का बहुत अच्छा उपयोग किया। जी–20 परिसर में भाषा व्याख्या के लिए ए. आई.–आधारित समाधान पेश किए गए। उदाहरण के लिए, एक स्थानीय ड्राइवर ए. आई.–सक्षम वॉयस ऐप की मदद से किसी विदेशी प्रतिनिधि से बातचीत कर सकता है।"

– प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

(प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी और माइक्रोसॉफ्ट के सह–संस्थापक बिल गेट्स के बीच दिनांक 29.03.2024 को नई दिल्ली में हुई चर्चा में माननीय प्रधानमंत्री ने कृत्रिम बुद्धिमता पर अपने विचार कुछ इस तरह व्यक्त किये।)

कृत्रिम बुद्धिमत्ता या आम भाषा में कहे तो आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (ए. आई.) का प्रारंभ 1950 के दशक में कंप्यूटर के आविष्कार के साथ हुआ था। कृत्रिम बुद्धिमत्ता या ए. आई. के विभिन्न प्रकार होते हैं जैसे पूर्णतः प्रतिक्रियात्मक (रिएक्टिव), सीमित स्मृति (लिमिटेड मेमोरी), मस्तिष्क सिद्धांत (ब्रेन थ्योरी), आत्म–चेतन (सेल्फ कॉनशिसनेस) आदि। जैसे–जैसे कंप्यूटर के क्षेत्र में विकास होता गया वैसे–वैसे ए. आई. भी विकसित होती गई और आज लगभग 70 सालों बाद आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (ए. आई.) ने हमारे जीवन के विभिन्न पहलुओं में क्रांति ला दी है। भाषायें भी इस तकनीकी प्रगति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। ए. आई. में हिन्दी की भूमिका विभिन्न कारणों से बहुआयामी और आवश्यक है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता या ए. आई. में हिन्दी की भूमिका अनुसंधान और विकास का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है, क्योंकि हिन्दी दुनिया की सबसे व्यापक रूप से बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता को मानव भाषा को समझने और उत्पन्न करने के लिए प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण (नेचुरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग या एन. एल. पी.) क्षमताओं की आवश्यकता होती है और हिन्दी इस संदर्भ में एक आवश्यक भाषा है। एन.एल. पी. आर्टिफिशिअल इंटेलिजेंस का एक उपक्षेत्र है जो मानव भाषा की समझ और पीढ़ी से संबंधित है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता में हिन्दी की भूमिका भाषा प्रसंस्करण क्षमताओं को बढ़ाने, समावेशिता को बढ़ावा देने, नवाचार को बढ़ावा देने और सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने के लिए अति महत्वपूर्ण है। हिन्दी कृत्रिम बुद्धिमत्ता के आवेदन व्यापक हैं और चुनौतियां दुर्गम नहीं हैं। अधिक अनुसंधान, विकास और नवाचार के साथ, हिंदी ए. आई. भारत की वृद्धि और विकास में एक महत्वपूर्ण योगदानकर्ता बन सकता है। हिन्दी कृत्रिम बुद्धिमत्ता का भविष्य विभिन्न उद्योगों और क्षेत्रों में संभावित अनुप्रयोगों के साथ आशाजनक है। जैसे–जैसे कृत्रिम बुद्धिमत्ता तकनीक विकसित होती जा रही है वैसे–वैसे हम अधिक सटीक और कुशल हिन्दी ए. आई. मॉडल देखने की उम्मीद कर सकते हैं। भारत में ए. आई. संचालित समाधानों की बढ़ती मांग हिन्दी कृत्रिम बुद्धिमत्ता के विकास को बढ़ावा देगी जो आगे चल कर नवाचार और सांस्कृतिक संरक्षण को बढ़ावा देगी। भारत सरकार ने हिंदी कृत्रिम बुद्धिमत्ता के महत्व को भी मान्यता दी है और हिन्दी भाषा प्रौद्योगिकियों के विकास को बढ़ावा देने के लिए पहल भी कर रही है। इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय (एम. ई. आई. टी. वाई) ने हिन्दी सहित विभिन्न भारतीय भाषाओं से सम्बंधित प्रौद्योगिकियों के विकास को बढ़ावा देने के लिए कई कार्यक्रम शुरू किए हैं। इसके अलावा, कई निजी कंपनियां और स्टार्टअप भी हिन्दी ए. आई. समाधान विकसित करने पर काम कर रहे हैं। ये कंपनियां अभिनव हिन्दी ए. आई. अनुप्रयोगों को विकसित करने के लिए मशीन लर्निंग और डीप लर्निंग जैसी उन्नत तकनीकों का लाभ उठा रही हैं। हालांकि, प्रगति के बावजूद, अभी भी कई चुनौतियां हैं जिन्हें संबोधित करने की आवश्यकता है। हिंदी भाषा डेटासेट और संसाधनों में मानकीकरण की कमी एक बड़ी चुनौती है।



इसके अतिरिक्त, हिंदी एन. एल. पी. में अधिक अनुसंधान और हिंदी भाषा में अधिक विशेषज्ञों की आवश्यकता है। समावेशिता को बढ़ावा देने, नवाचार को बढ़ावा देने और सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने के लिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस में हिन्दी की भूमिका महत्वपूर्ण है। अधिक अनुसंधान, विकास और नवाचार के साथ,हिन्दी ए. आई. भारत की वृद्धि और विकास में एक महत्वपूर्ण योगदानकर्ता बन सकता है।

उपरोक्त के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता के इन विभिन्न क्षेत्रों में काम करने की आवश्यकता है –

1. भाषा प्रसंस्करण: हिन्दी भाषा प्रसंस्करण ए. आई. का एक महत्वपूर्ण घटक है, जो मशीनों को मानव भाषा को समझने और उत्पन्न करने में सक्षम बनाता है। हिन्दी ए. आई. चैटबॉट, आभासी सहायक (वर्चुअल असिस्टेंस), भाषा अनुवाद सॉफ्टवेयर और भाषण पहचान प्रणाली जैसे विभिन्न अनुप्रयोगों (अप्लिकेशन) को बढ़ा सकता है। यह एआई को हिंदी भाषी आबादी के लिए अधिक सुलभ बना सकता है, भाषा की खाई को पाट सकता है और डिजिटल समावेशिता को बढ़ावा दे सकता है। इस क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण कदम उठाते हुए भारत सरकार के "राजभाषा विभाग" द्वारा "कंठस्थ 2.0 भाषिणी, अनुवादिनी आदि" नामक सॉफ्टवेयर बनाया गया है, जिसका उपयोग इस लेख को लिखने में भी किया गया है।



2. प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण (एन. एल. पी): नेचुरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग या एन. एल. पी. में कंप्यूटर द्वारा मानव भाषा की व्याख्या भी की जाती है। यह डाटा इनपुट की पद व्याख्या करने, उसका अर्थ निर्धारित करने और संभावित रूप से उसे दूसरे प्रारूप या भाषा में बदलने की प्रक्रिया को संदर्भित करता है। प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण (एनएलपी) एक मशीन लर्निंग तकनीक है जो कंप्यूटर को मानव भाषा की व्याख्या, हेरफेर और समझने की क्षमता प्रदान करती है। आज संगठनों के पास ईमेल, टेक्स्ट संदेश, सोशल मीडिया न्यूजफीड, वीडियो, ऑडियो और अन्य जैसे विभिन्न संचार चैनलों से बड़ी मात्रा में वॉयस और टेक्स्ट डेटा है। इसके अलावा, हिंदी एन. एल. पी. भावना विश्लेषण (सेंटिमेंट एनालिसिस), पाठ सारांश (टेक्स्ट समैरिजशन) और भाषा अनुवाद की सुविधा प्रदान करते हुए ग्राहक सेवा, विपणन (मार्केटिंग) और अनुसंधान जैसे उद्योगों में नवाचार को बढ़ावा दे सकती है। हिंदी एन. एल. पी., कृतिम बुद्धिमत्ता प्रणालियों को हिंदी पाठ का विश्लेषण और "टेक्स्ट" उत्पन्न करने की सुविधा प्रदान करता है। कंप्यूटर की भाषा में "टेक्स्ट" ऐसे कैरेक्टर्स हैं जो शब्द, वाक्य और पैराग्राफ बनाने के लिए उपयोग किए जाते हैं। सिर्फ टेक्स्ट से ही जानकारियों को दिया जाना संभव हो सकता है, लेकिन टेक्स्ट का उपयोग सामान्य जानकारी देने में ही किया जाता है । इसके अतिरिक्त एन. एल. पी. हमें भाषा सीखने, साहित्यिक सामग्री उत्पादन और सांस्कृतिक संरक्षण जैसे अनुप्रयोगों की सुविधा प्रदान करने में भी सक्षम बना सकता है।

एन. एल. पी. "एंटरप्राइज समाधानों" में भी बढ़ती भूमिका निभाता है जो व्यवसाय संचालन को सुव्यवस्थित और स्वचालित करने, कर्मचारी उत्पादकता बढ़ाने और मिशन–महत्वपूर्ण व्यावसायिक प्रक्रियाओं को सरल बनाने में मदद करते हैं।

3. भाषण पहचान प्रणाली (स्पीच रिकॉग्निशन) : हिंदी भाषण पहचान प्रणाली दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए वरदान साबित हो सकती है। यह दृष्टिबाधित व्यक्तियों की सहायता कर सकती है या आवाज–नियंत्रित उपकरणों को सक्षम कर सकती है, जिससे उनकी पहुंच और सुविधा दोनों ही बढ़ा सकती है। इसके अलावा, हिंदी भाषण संश्लेषण प्रणाली प्राकृतिक–ध्वनि भाषण उत्पन्न कर सकती है, जिससे कृत्रिम बुद्धिमत्ता अनुप्रयोगों को हिंदी भाषी उपयोगकर्ताओं के साथ अधिक प्रभावी ढंग से संवाद करने में सक्षम बनाया जा सकता है। यह प्रणाली प्राकृतिक रूप से अथवा किसी दुर्घटना से त्रस्त होकर बोलने में अक्षम व्यक्तियों के जीवन में बड़ा बदलाव ला सकती है।

4. सांस्कृतिक विरासत और भाषा संरक्षण : कृत्रिम बुद्धिमत्ता विकास में हिंदी का समावेश भाषा संरक्षण और सांस्कृतिक विरासत को बढ़ावा देता है। भाषा सीखने, सांस्कृतिक संरक्षण और विरासत को बढ़ावा देने के लिए ए. आई. संचालित उपकरण विकसित किए जा सकते हैं, जो हिंदी भाषा और संस्कृति को बनाए रखना सुनिश्चित करते हैं। यह उपकरण विदेश जाने वाले हिंदी भाषियों एवं विदेशों से भारत आने वाले पर्यटकों के लिए किसी वरदान से कम न होंगे। ये उपकरण पर्यटकों को होने वाली अनावश्यक परेशानियों से बचाते हुए देश की छवि भी विदेशी पटल पर धूमिल नहीं होने देंगे।

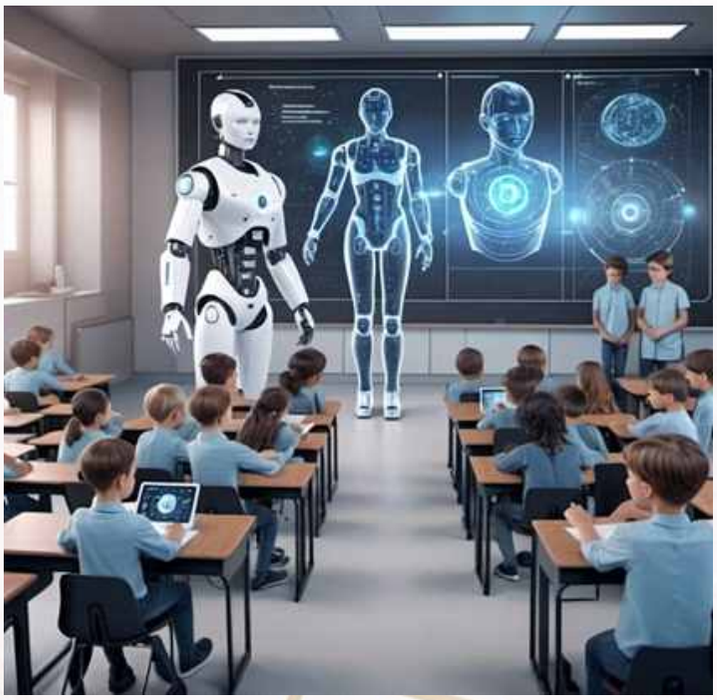


5. हिन्दी ए. आई. और मशीन लर्निंग : कृत्रिम बुद्धिमत्ता का एक उपवर्ग मशीन लर्निंग है। इस मशीन लर्निंग के अंतर्गत बनाये जा रहे किसी भी प्रतिरूप को प्रशिक्षित करने के लिए डेटा (सूचना, ज्ञान) पर निर्भर रहना होता है। हिन्दी भाषा डेटासेट का उपयोग मशीन लर्निंग मॉडल को प्रशिक्षित करने के लिए किया जा सकता है, जिससे ए. आई. सिस्टम को हिन्दी पाठ और भाषण से सीखने में सक्षम बनाया जा सकता है। इससे भाषा की समझ और उत्पादन क्षमताओं में सुधार हो सकता है एवं ए. आई. अनुसंधान और विकास में नवाचार को बढ़ावा मिल सकता है।

6. हिन्दी ए. आई. और रोबोटिक्स : रोबोटिक्स, एक और ए. आई. अनुप्रयोग है जो कि हिन्दी भाषा के एकीकरण से लाभान्वित हो सकता है। हिन्दी भाषी रोबोट अपनी मूल भाषा में मनुष्यों के साथ बातचीत कर सकते हैं, संचार और सहयोग बढ़ा सकते हैं। इसका स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा और ग्राहक सेवा जैसे उद्योगों पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ सकता है।

7. हिन्दी ए. आई. और स्वास्थ्य देखभाल : ए. आई. संचालित स्वास्थ्य प्रणाली हिन्दी भाषा समाकलन से लाभान्वित हो सकती है, जिससे रोगियों को अपनी मूल भाषा में स्वास्थ्य देखभाल प्रणालियों के साथ बातचीत करने में सक्षम बनाया जा सकता है। यह स्वास्थ्य देखभाल के परिणामों में सुधार कर सकता है, रोगी जुड़ाव को बढ़ा सकता है और स्वास्थ्य देखभाल में भाषा की बाधाओं को कम कर सकता है। देश के सुदूर प्रान्तों में जहाँ चिकित्सीय सेवायें मूलभूत सुविधाओं के अभाव में नहीं पहुँच पाती हैं, वहां पर भी कृत्रिम बुद्धिमत्ता से संचालित रोबोट्स भेज कर लोगों को लाभान्वित किया जा सकता है। कल्पना कीजिये किसी बच्चे की अनुपस्थिति में उसके वृद्ध माता–पिता को, उसकी ही आवाज में समय पर दवाइयां लेने को एक रोबोट प्रेरित कर रहा हो और उस रोबोट का चेहरा और हिन्दी बोलने का लहजा बिलकुल उनके बेटे की तरह ही हो।

8. हिन्दी ए. आई. और शिक्षा : ए. आई. संचालित शैक्षिक प्रणालियाँ हिन्दी भाषा के समन्वय से लाभान्वित हो सकती हैं, जिससे छात्र अपनी मूल भाषा में सीख सकते हैं। यह सीखने के परिणामों में सुधार कर सकता है, छात्र जुड़ाव को बढ़ा सकता है और शिक्षा में भाषा की बाधाओं को कम कर सकता है। शिक्षकों की कमी को दूर करते हुए चौबीसों घंटे विद्यार्थियों की मदद को उपलब्ध रह सकता है। वो भी बिना चिड़चिड़ाये और उन्हें डांटे या मारे बिना ।



9. हिन्दी ए. आई. और व्यवसाय : ए. आई.–संचालित व्यावसायिक प्रणालियां भी हिन्दी भाषा एकीकरण से लाभान्वित हो सकती हैं, जिससे व्यवसायों को अपनी मूल भाषा में ग्राहकों और ग्राहकों के साथ संवाद करने में सक्षम बनाया जा सकता है। यह ग्राहक जुड़ाव में सुधार कर सकता है, व्यावसायिक परिणामों को बढ़ा सकता है और व्यवसाय में भाषा की बाधाओं को कम कर सकता है। इससे दुनिया के किसी भी कोने में बैठी कोई भी कम्पनी अपनी सेवाएं देशवासियों के जीवन को सुगम बनाने हेतु प्रदान कर सकती है एवं किसी और देश के एकाधिकार को समाप्त कर सकती है।

10. हिन्दी ए. आई. और अंतरिक्ष अनुसंधान : अंतरिक्ष अनुसंधान में हिन्दी कृत्रिम बुद्धिमत्ता को शामिल करना अंतरिक्ष अन्वेषण के इतिहास में एक महत्वपूर्ण विकास है। जैसे–जैसे भारत का अंतरिक्ष कार्यक्रम आगे बढ़ता जा रहा है, अंतरिक्ष अनुसंधान में हिन्दी का उपयोग तेजी से महत्वपूर्ण होता जा रहा है। अंतरिक्ष अनुसंधान पर लंबे समय से अंग्रेजी और अन्य अंतर्राष्ट्रीय भाषाओं का प्रभुत्व रहा है। अंतरिक्ष अनुसंधान में हिन्दी ए. आई. का उपयोग इसे हिन्दी भाषी वैज्ञानिकों, इंजीनियरों और शोधकर्ताओं के लिए अधिक सुलभ बना सकता है। इससे अधिक विविध और समावेशी अंतरिक्ष कार्यक्रम हो सकते हैं। हिन्दी ए. आई. टीम के सदस्यों के बीच संचार की सुविधा प्रदान कर सकती है जो अलग–अलग भाषाएं बोलते हैं, बेहतर सहयोग सुनिश्चित करते हैं और त्रुटियों को कम करते हैं। जबकि अंतरिक्ष अनुसंधान में हिन्दी को लागू करने में

चुनौतियां हैं, जैसे कि विशेष सॉफ्टवेयर और प्रशिक्षण पेशेवरों का विकास, अवसर विशाल हैं। अंतरिक्ष अनुसंधान में हिंदी का उपयोग राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दोनों तरह से सहयोग और नवाचार के लिए नए रास्ते खोलते हुए नए–नए रोजगार के अवसर भी प्रदान करेगा। जैसे –



1. स्पेसक्राफ्ट नेविगेशनः अंतरिक्ष यान के लिए नेविगेशन सिस्टम विकसित करने के लिए हिन्दी ए. आई. का उपयोग किया जा सकता है, जिससे भारतीय अंतरिक्ष मिशनों के लिए संचार और नेविगेट करना आसान हो जाता है।

2. एस्ट्रोनॉट प्रशिक्षणः अंतरिक्ष यात्रियों को प्रशिक्षित करने के लिए हिंदी ए. आई. का उपयोग किया जा सकता है, जिससे उनके लिए अंतरिक्ष मिशनों के दौरान एक साथ संवाद करना और काम करना आसान हो जाता है।

3. अंतरिक्ष शिक्षाः हिन्दी ए. आई. का उपयोग छात्रों और आम जनता को अंतरिक्ष अनुसंधान के बारे में शिक्षित करने के लिए किया जा सकता है, जो भविष्य की पीढ़ियों को विज्ञान और प्रौद्योगिकी में करियर बनाने के लिए प्रेरित करता है।

कृत्रिम बुद्धिमता में हिंदी के महत्व के बावजूद, ऐसी चुनौतियां हैं जिन्हें संबोधित करने की आवश्यकता है। हिंदी भाषा डेटासेट की सीमित उपलब्धता, मानकीकरण की कमी, और हिंदी एनएलपी में अधिक शोध की आवश्यकता। यह ऐसी कुछ चुनौतियां हैं जिनपर हिंदी कृत्रिम बुद्धिमता का भविष्य टिका है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस में हिंदी की भूमिका भाषा प्रसंस्करण क्षमताओं को बढ़ाने, समावेशिता को बढ़ावा देने, नवाचार को बढ़ावा देने और सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने के लिए महत्वपूर्ण है। जैसे–जैसे एआई तकनीक का विकास जारी है, हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं का एकीकरण इसकी पूरी क्षमता का उपयोग करने के लिए महत्वपूर्ण होगा।

अंत में, चुनौतियों का समाधान करके और अवसरों का लाभ उठाकर, हम यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि हिंदी भाषा, कृत्रिम बुद्धिमता के भविष्य और इसके अनुप्रयोगों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाए। ए. आई. में हिंदी के एकीकरण के विभिन्न उद्योगों और क्षेत्रों के लिए दूरगामी प्रभाव हैं और इसके संभावित लाभ पर्याप्त हैं। हिन्दी ए. आई. का लाभ उठाकर, हम अधिक समावेशी, अभिनव और सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील ए. आई. सिस्टम बना सकते हैं जो समग्र रूप से समाज को लाभान्वित करती रहे।



"गणित और विज्ञान ही विकास की कुंजी हैं
कंप्यूटर के बिना भविष्य की कल्पना नहीं की जा सकती"

- रामानुजन

साथी



राजेश अधिकारी
बहुकार्यकर्मी(बाह्यस्त्रोत)

वो विदा कुछ यूँ हुई जैसे सांसे रूक गई।
बोलते–बोलते उसकी आंखे झुक गई

हमने सोचा ये फासला पल भर का होगा।
पर ये दूरी तो उम्र भर की सजा बन गई।
हर मोड़ पर उसकी कमी महसूस होती है।
हर बात अधूरी सी लगती है।
वो गयी तो चुपचाप ही गई
पर उसकी यादें तो शोर करती है।
वो विदा कुछ यूँ हुई जैसे साँसे रूक गई
बोलते–बोलते उसकी आँसे झुक गई।

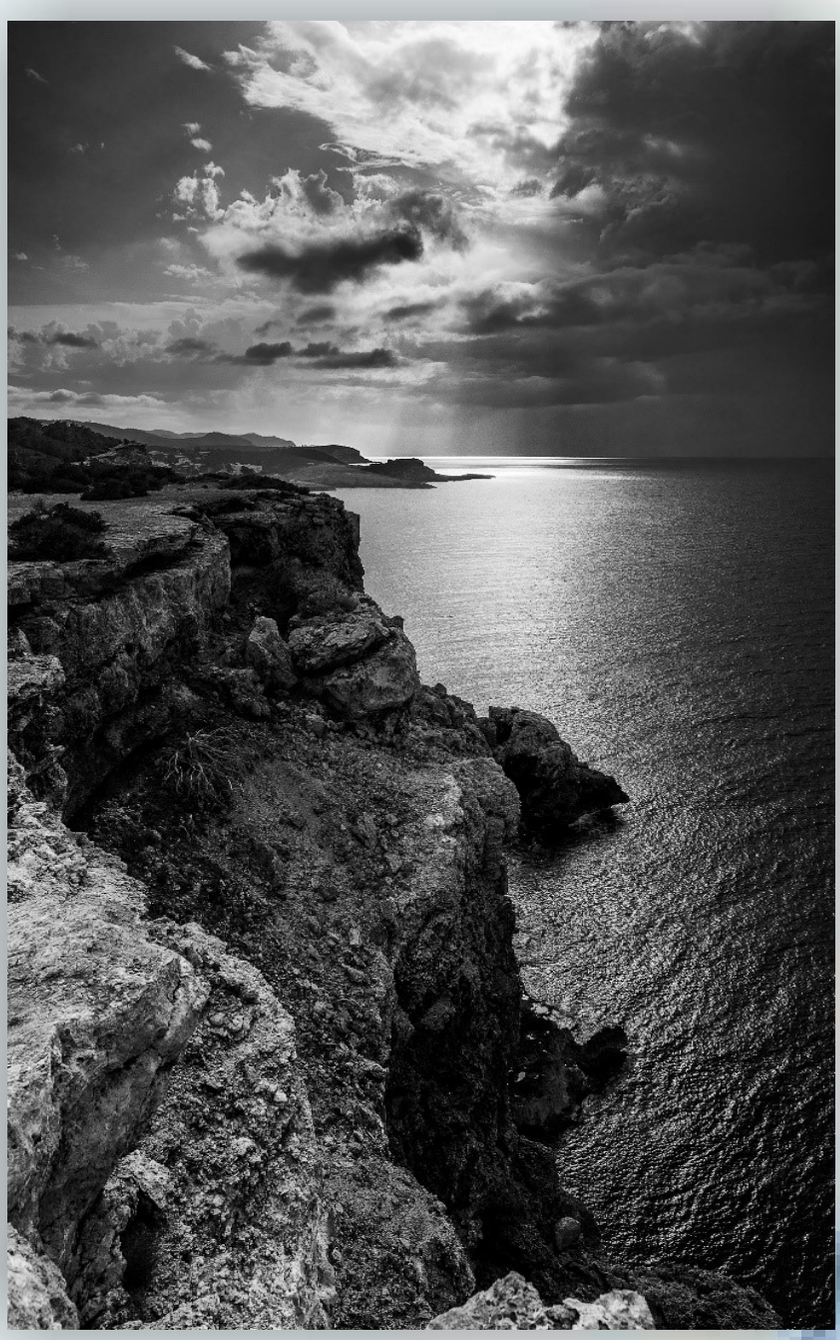
थक चुकी होगी वो भी
न रिश्तों के बोझ से
न दुनिया के सवालों से
बल्कि अपने ही मन के शोर से

अब न उसे जवाब चाहिये थे।
न कोई शिकायत बची थी।
वो बस देख रही थी।
अपने भीतर की उस नदी को
जो अब बहती नहीं थी
थम गई थी शांत हो गई थी

कभी माँ कभी पत्नी कभी बेटी बनकर
जो निभाया वो अब बीत गया

अब वे केवल वो थी
न किसी को न अपने आप की भी
ना आंसू बचे थे
ना मुस्कान की चाह
बस एक गहरी साँस और
मन में उठता वैराग का मौन

थक चुकी थी वो
न रिश्तों के बोझ से
न दुनियावी सवालों से
बल्कि अपने ही मन के शोर से।



गाँव में सरकारी कर्मचारी की व्यथा



दीपक उज्जवल,
आँ0प्र0सं0



गाँव न जाएँ तो कुछ लोग कहते हैं, नौकरी लगने के बाद गांव से मतलब नहीं रखता,
अगर एक महीना गाँव में ठहर जाएँ तो कहते हैं, इसकी नौकरी चली गई।
गाँव में सुबह घूमने निकल जाएँ तो कहते हैं, इसको शुगर, बी.पी., हार्ट की दिक्कत है,
अगर सुबह देर से जागते है तो कहते हैं, कि नौकरी के बाद आलसी हो गया है।
गाँव कार से चले जाएँ तो कहते हैं, यह तो दिखावा करता है,
अगर ट्रेन से जाएँ तो कहते हैं, बहुत कंजूस हैं।
वहीं अगर अच्छे से कपड़े पहन ले तो कहते हैं,
सारी सैलरी को कपड़ो पे उड़ा देता होगा।

जब बिना दहेज के शादी कर लेते हैं तो कहते हैं, दहेज क्यों नहीं लिया गया,
अगर शादी ना करे तो कहते हैं, इसका तो विवाह हो चुका।
जब गाँव में जाके खेती नहीं करें तो कहते हैं, नौकरी का घमण्ड आ गया है,
अगर खेती करें तो कहते हैं, इसका तो नौकरी से भी पेट नहीं भरता।
जब कभी गाँव बीमार होकर चले जायें तो कहते हैं, वहाँ का खानपान अच्छा नहीं होगा,
मोटा होकर जाएँ तो कहते हैं, फास्ट फूड खाकर फूल गया है,
वहीं अगर दुबले–पतले हो जाएँ तो कहते हैं, नशा करता होगा।
गाँव में अच्छा घर नहीं बनाए तो कहते हैं, ऐसी नौकरी करने का क्या फायदा
वहीं अगर अच्छा घर बना ले, तो कहते हैं फालतू रूपये बर्बाद कर दिये इससे अच्छा तो शहर में बना लेता।

ले चलो मुझे



शिवम सिंह,
खण्डीय लेखाधिकारी



ले चलो गांव की पगडंडियों में फिर से मुझे तुम,
पीले सरसों के फूलों में,
आम की डाली के झूलों में,
अल्हड़ अनजान बचपन की मस्ती में,

उन ख्वाबों में,
उन गलतियों भूलों में,
ले चलो...

गांव के बाहर के,
पीपल के पत्तों की सरसराहट में,
बाँस की दूरबीन में,
कच्ची इमली की झुनझुनाहट में,
बबूल के गोद में, काँटों में,
खेतों के बीच बीतती उजली रातों में,
ले चलो...

तितलियों के संग होड़ में,
चहकते पक्षियों के संग भोर में,
बागों में पेड़ों के नीचे बीतती दुपहरी में,
नदी किनारे डूबते सूरज की श्याम सुनहरी में,
ले चलो गाँव की पगडंडियों में फिर से मुझे तुम,
ले चलो...

हिन्दी एवं भारतीय भाषाओं का स्वर्णिम काल



विनोद कुमार शर्मा,
वरि. लेखाधिकारी (सेवानिवृत्त)

हिन्दी एवं अन्य सभी भारतीय भाषाओं की वर्तमान स्थिति का यदि आकलन किया जाए तो यह स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ता है कि हमारे देश में विगत एक दशक में हिन्दी एवं सभी भारतीय या क्षेत्रीय भाषाएं सर्वाधिक सशक्त हुई हैं। वास्तव में यदि देखा जाए तो यह अवधि हिन्दी एवं भारतीय भाषाओं के लिए स्वर्णकाल रही है। इस अवधि में हिन्दी एवं अन्य सभी क्षेत्रीय भाषाओं को खूब फलने–फूलने तथा आगे बढ़ने का पूरा अवसर प्राप्त हुआ है। इन वास्तविकता को भी नकारा नहीं जा सकता कि जितना भारतीय भाषाएं आगे बढ़ेंगी, उतना ही हिन्दी को भी समृद्ध एवं सशक्त होने का अवसर प्राप्त होगा। देखा जाए तो हिन्दी का किसी भी क्षेत्रीय भाषा से कोई द्वेष नहीं है बल्कि हिन्दी का दिल तो इतना विशाल है कि वह सभी भारतीय भाषाओं के शब्दों को सरलता से खुले दिल से अपने में समाहित कर लेती है।

हिन्दी एवं क्षेत्रीय भाषाओं के इस स्वर्णिम काल पर यदि दृष्टिगत करें तो यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि इस अवधि में हिन्दी की लोकप्रियता एवं प्रभाव न केवल भारत में, बल्कि दुनिया के कई देशों में भी बढा है तथा आज हिंदी समय के साथ न केवल समर्थ अपितु वैश्विक होती जा रही है। भारत में इस एक दशक की अवधि में हिन्दी एवं क्षेत्रीय भाषाओं की लोकप्रियता एवं प्रचार–प्रसार में अभूतपूर्व प्रगति हुई है।

आज भारतीय राजनीतिक दल भी इंटरनेट मीडिया के विभिन्न प्लेटफार्म पर जनता से संवाद करते समय तीन भाषाओं, अर्थात हिन्दी, अंगेजी एवं क्षेत्रीय भाषा पर बल दे रहे हैं। बडे पैमाने पर बहुराष्ट्रीय कंपनियां अपना माल बेचने के लिए हिन्दी एवं भारतीय भाषाएं अपना रही हैं। हिन्दी भाषा के संदर्भ में यदि देखा जाए तो उपभोक्ताओं के एक बड़े वर्ग पर आज हिन्दी का एक छत्र राज होने के कारण ही किसी भी बहुराष्ट्रीय कंपनी के लिए अपना माल बेचने के लिए हिन्दी अपनाये बिना भारतीय बाजार में अपने पैर जमाना कठिन है। इससे साफ है कि हिन्दी के अभाव में भारतीय बाजार की सफलता की कल्पना भी नहीं की जा सकती है।



हिन्दी समय के साथ ही समर्थ एवं मजबूत होती जा रही है। हमारे देश के न्यायालयों ने भी न्याय एक नागरिकों की पहुँच को सार्थक एवं सुगम बनाने हेतु स्थानीय भाषा में निर्णय देने की आवश्यकता पर बल दिया है। हिन्दी एवं भारतीय भाषाओं के लिए इससे अधिक अनुकूल वातावरण, उत्साहजनक स्थिति एवं समृद्ध होने का कोई दूसरा काल नही हो सकता।

आमजन में पूर्व में यह भ्रान्ति रही है कि हिन्दी एक रोजगारपरक भाषा नही है। वास्तव में यदि देखा जाए तो यह गुजरे जमाने की बात हो गई है। आज सभी बडी कंपनियों द्वारा जनता तक अपनी पहुँच बनाने के लिए हिन्दी एवं भारतीय भाषाओं का प्रयोग किया जा रहा है। स्थिति यह है कि इलेक्ट्रानिक मीडिया, प्रिंट मीडिया सहित प्रचार के सभी माध्यमों में हिन्दी में विज्ञापनों की बहार है। इसका प्रमुख कारण अंग्रेजी में जारी किये गये विज्ञापनों की पहुँच का एक वर्ग विशेष तक ही सीमित होना तथा बहुतायत में आमजन का इनको न समझ पाना है। ऐसे उत्पाद जिसकी जानकारी देश के एक बडे उपभोक्ता वर्ग तक नही पहुँच पाती, की सफलता कठिन ही नही अपितु असंभव है। बंगाल जिनकी अपनी क्षेत्रीय भाषाएं हैं, वहां के जनसामान्य द्वारा भी हिन्दी ठीक से समझी एवं बोली जाती है।

दक्षिण भारत में भी हिन्दी समय के साथ समर्थ होती जा रही है। उक्त क्षेत्र की जनता अब समझने लगी है कि हिन्दी से उनकी क्षेत्रीय भाषा को कोई खतरा नही है। यह भी कि यदि वे अपनी क्षेत्रीय भाषा के साथ ही साथ हिन्दी भी सीखते हैं तो उनके लिए संपूर्ण भारत में रोजगार के अवसर भी उतने ही अच्छे उपलब्ध होंगे। प्रमाण के तौर पर हम देख सकते हैं कि अखिल भारतीय सेवाओं के अनेकों युवा अधिकारी हिन्दी भाषी राज्यों में कार्यरत हैं जो बहुत ही कम समय में हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त करके ऐसे क्षेत्रों में सफलतापूर्वक कार्य कर रहे हैं। यह सब उनकी दृढ इच्छाशक्ति से ही संभव हो पाया है। क्षेत्रीय भाषा सीखने में इसी प्रकार का जज्बा हिन्दी भाषी क्षेत्रों के लोगों द्वारा भी गैर–हिन्दी भाषी क्षेत्रों में अपनी सेवाओं के दौरान तथा कार्य–व्यवहार में अपनाया जाना अपेक्षित है जिससे कि हिन्दी भाषा से क्षेत्रीय भाषाओं की दूरियां कम हों, उनमें निकटता बढे तथा लोग इस बात को समझ सके कि हिन्दी से किसी भी क्षेत्रीय भाषा को कोई खतरा नही है। वास्तविकता तो यह है कि हिन्दी का जितना विकास होगा, उतना ही क्षेत्रीय भाषाओं को भी आगे बढने का अवसर प्राप्त होगा। अतः हमें सभी भाषाई मतभेद, यदि कोई हो तो, उन्हें भुलाकर हिन्दी एवं सभी क्षेत्रीय भाषाओं के इस स्वर्णिम काल का भरपूर लाभ उठाना चाहिए। कई क्षेत्रों में अंग्रजी ने जो अपना भाषाई दबदबा कायम किया हुआ है, वास्तव में यदि देखा जाए तो उसके प्रभाव को क्षीण करने का यह सबसे उचित समय है। अंग्रेजी का स्थान हिन्दी एवं भारतीय भाषाओं को यदि प्रदान किया जाता है तो यह आमजन के साथ ही हमारे देश के लिए भी गौरव की बात होगी।

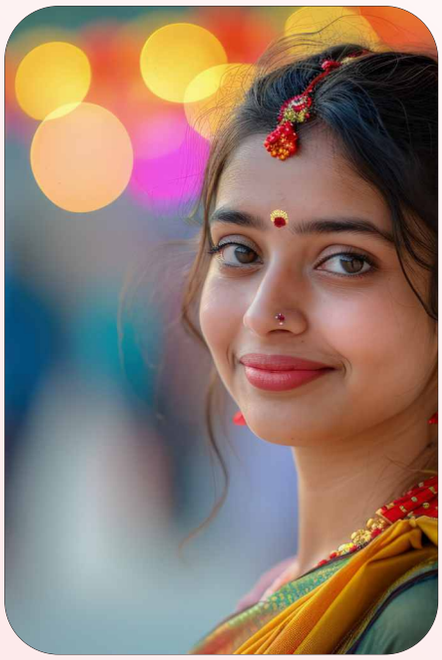


बहन जी...

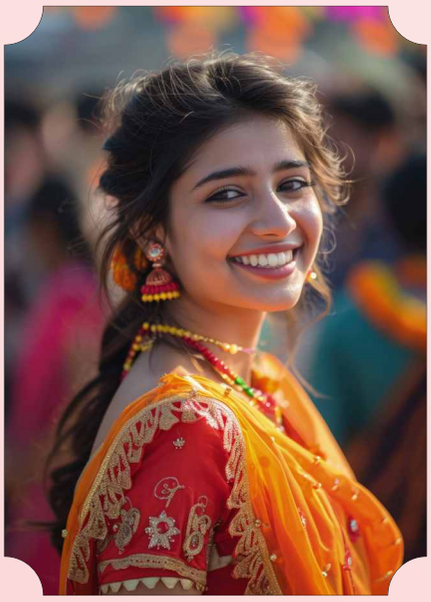


सत्य प्रकाश सिंह,
सहायक लेखाधिकारी

कभी किसी गाँव की मिट्टी से उठती भोर की आवाज में, किसी बुजुर्ग की दुआओं में, या राखी की डोर में बंधे रिश्तों की कोमलता में जो नाम पुकारा गया– वह था बहन, और कभी–कभी सम्मान से कहा गया बहन जी। यह शब्द नहीं था, यह एक एहसास था । इसमें लोरी की मिठास थी और एक ऐसे रिश्ते की गहराई थी जिसमें अधिकार भी था और आदर भी।



जब स्वामी विवेकानंद ने 1893 में शिकागो की धरती पर "Sisters and Brothers of America" कह कर अपने उद्बोधन की शुरूआत की थी, तब वह केवल एक भाषण नहीं था– वह भारत की आत्मा की प्रतिध्वनि थी। स्वामी विवेकानंद ने जब दुनिया से 'बहन' शब्द के माध्यम से भारतीय संस्कृति को जोडा, तो यह शब्द न केवल नारी के प्रति सम्मान का प्रतीक था, बल्कि एक गहरी आत्मीयता और श्रृद्धा का भी बोध कराता था। वहॉ 'बहन' शब्द में सिर्फ नारी का संबोधन नहीं था, बल्कि समस्त स्त्री जाति के प्रति श्रृद्धा, करूणा और आत्मीयता का संकल्प था। यही था भारत–जहाँ स्त्री को बहन, माँ और देवी के रूप में देखा गया, पूजा गया। प्राचीन भारतीय समाज में, 'बहन' शब्द घर के दायरे में ही नहीं, समाज के हर हिस्से में एक आदर्श संबंध का प्रतीक रहा है। रक्षाबंधन जैसे त्यौहार इस रिश्ते की गरिमा को और भी मजबूत करते हैं, जहां बहन केवल एक स्त्री नहीं, बल्कि सम्मान और सुरक्षा की पात्र मानी जाती है। पर समय की रेत पर चलते हुए, यह शब्द कब व्यंग्य बन गया, राजनैतिक नारेबाजी में ढल गया, और कब मीम्स की चुभती हँसी में खो गया– शायद हमें पता ही नहीं चला। पर हर बदलाव प्रगति नहीं होता। फिल्मों, चुटकुलों, सोशल मीडिया और टीवी धारावाहिकों ने जब इस शब्द को 'सीधी–सादी', 'पुराने ख्यालों वाली', या 'अनाकर्षक' स्त्री के रूप में चित्रित करना शुरू किया– तब यह शब्द अपने मूल से भटकने लगा। आज 'बहन जी' कहने वाले होंठों पर सम्मान नहीं, व्यंग्य की मुस्कान होती है। जैसे यह संबोधन अब किसी को नीचा दिखाने का प्रतीक बन गया हो। और यह वह समय है जब शब्द से उसकी आत्मा अलग हो जाती है। हाल ही में एक कार्यक्रम में एक पुरूष ने एक महिला अतिथि का स्वागत करते हुए कहा, 'आईए बहन जी, आपका स्वागत है।' इस पर महिला ने थोडी नाराजगी व्यक्त की और कहा, 'माइंड योर लैंग्वेज, किस ऐंगल से मैं बहन जी दिख रही हूँ । यहाँ महिला को शायद 'बहन जी' शब्द से आपत्ति थी, उन्होंने महसूस किया कि इस शब्द के माध्यम से उन्हें एक 'पारंपरिक' या 'पिछडे' रूप में देखा जा रहा है। हालाँकि, मुझे लगता है कि 'बहन जी' शब्द को पिछडेपन का प्रतीक मानना, कदाचित एक मानसिक विकार हो सकता है। जब हम किसी को 'बहन जी' या 'बहन' जैसे शब्दों से संबोधित करते हैं, तो इसका मतलब यह नहीं है कि हम उन्हें कमतर या पुराना समझ रहे हैं। बल्कि, यह शब्द सम्मान, स्नेह और आदर का प्रतीक है। यह हमें यह याद दिलाता है कि हम एक दूसरे को सम्मान देने के बजाय, सामाजिक दायित्व और सामूहिक सौहार्द से जोडते हैं। जो व्यक्ति 'बहन जी' जैसे शब्दों का उपयोग करता है, उसे यह समझना चाहिए कि वह शब्द का वास्तविक सम्मान और भावना के साथ इस्तेमाल कर रहा है। वहीं, जो इसे सुन रहा है, उसे भी उस भावना को समझने और स्वीकार करने की जरूरत है।



सोशल मीडिया, जो आधुनिक समाज में संवाद का एक प्रमुख माध्यम बन चुका है, ने भी 'बहन जी' शब्द के अर्थ को नया आकार दिया है। यहां यह शब्द कभी सम्मान, स्नेह या आदर का प्रतीक हो सकता था, लेकिन अब यह शब्द तिरस्कार, चिढाने और मजाक उडाने का प्रतीक बन चुका है।



सोशल मीडिया पर 'बहन जी' शब्द का प्रयोग अब व्यंग्यात्मक और कटाक्षपूर्ण तरीके से किया जाने लगा सोशल मीडिया की तेजी में 'बहन जी' अब एक ट्रेंड भी हो सकती है, और ट्रोलिंग का टूल भी। किसी को 'बहन जी' कहना अब या तो आदर है, या फिर कटाक्ष। संदर्भ अब स्पष्ट नहीं रह गए। शब्द अर्थ से ज्यादा उपयोग के ढंग से पहचाना जाने लगा है।

यह बदलाव आज हमारे समाज के रिश्तों के प्रति दृष्टिकोण को बदलने का कारण बन रहा है। जहां एक समय में यह शब्द पारिवारिक रिश्तों की गरिमा और स्नेह का प्रतीक था, वहीं अब यह संबंधों के उल्लंघन और सम्मान के उल्लंघन का एक रूप बन चुका है। यह परिवर्तन केवल भाषा में नहीं, बल्कि हमारी सोच और संवेदनाओं में भी स्पष्ट रूप से दिखता है। 'बहन जी' शब्द के बदलते रूप से एक गहरी चिंता उठती है– क्या हम अपने रिश्तों की गरिमा को खोते जा रहे हैं ? क्या हम इस शब्द के मूल अर्थ से भटक कर इसे केवल एक सामाजिक या राजनीतिक औजार बना रहे हैं ? समाज के बदलते दृष्टिकोण और परिभाषाओं से यह सवाल उठता है कि क्या हम वास्तव में नारी को उसी सम्मान के साथ देख पा रहे हैं, जैसा हमारे पूर्वजों ने किया था ? समाज में, हमें यह समझना होगा कि 'बहन' शब्द सिर्फ पारिवारिक रिश्तों तक सीमित नहीं है। एक समृद्व और आदर्श समाज में हमें एक दूसरे को समान दृष्टिकोण से देखना चाहिए, और हर महिला को सम्मान देने के लिए इस तरह के शब्दों का उपयोग करना चाहिए। इन शब्दों का सही प्रयोग न केवल रिश्तों को मजबूत करता है बल्कि समाज में एकता और सौहार्द भी बढाता है।

यह शब्द केवल एक नारी के सम्मान का प्रतीक नहीं था, बल्कि यह समाज की संस्कृति और संवेदनशीलता का भी प्रतीक था। समाज के लिए यह एक उपदेश था कि एक व्यक्ति का सम्मान केवल उसके बाहरी रूप, स्थिति या आंतरिक शक्ति से नहीं, बल्कि उसकी आत्मीयता, उसकी पवित्रता और उसकी गरिमा से किया जाना चाहिए। 'बहन जी' के बदलते मायने हमें यह सोचने पर मजबूर करते हैं कि शब्दों का प्रभाव केवल संवाद तक सीमित नहीं है, बल्कि वे हमारे समाज की गहरी संरचनाओं और सांस्कृतिक धारा को प्रभावित करते हैं। यह बदलाव हमारे समाज की सोच, दृष्टिकोण और सांस्कृतिक पहचान को चुनौती दे रहा है। क्या हम इसे केवल एक राजनीतिक औजार, या सामाजिक झांकियों में बदलने देंगे, या फिर हम इसे उसकी वास्तविक गरिमा, उसके मूल अर्थ और पवित्रता के साथ संरक्षित रखेंगे?

समाज को यह समझने की आवश्यकता है कि शब्द केवल ध्वनियाँ नहीं होते, बल्कि वे हमारे विचार, हमारी संस्कृति और हमारी सामाजिक पहचान का प्रतीक होते हैं। अगर हम 'बहन जी' जैसे शब्द को उसकी मूल गरिमा और सम्मान के साथ संरक्षित रखते हैं, तो हम न केवल अपनी सांस्कृतिक धरोहर को बचाएंगे, बल्कि हम रिश्तों की पवित्रता और समाज की संवेदनशीलता को भी बनाए रखेंगे। शब्द, केवल ध्वनि या अक्षर नहीं होते– वे भाव होते हैं। उनमें स्मृतियाँ बसती हैं, पीढियों की आस्थाएँ गूंजती हैं। 'बहन जी' भी ऐसा ही शब्द था, जिसने कभी रिश्ते की कोमलता को अपनी वाणी दी थी। पर आज वह शब्द चौराहे पर खडा है– कहीं आदर की तलाश में, कहीं अपने असली स्वरूप की पहचान में।

शायद अब समय आ गया है कि हम फिर से भाषा को उसकी गरिमा लौटाएं। 'बहन जी' को फिर से वही आदर दें, वही आत्मीयता दें– जिससे यह शब्द एक बार फिर से रिश्तों की मधुर ध्वनि बन सके, न कि व्यंग्य की तीखी प्रतिध्वनि।

मेरा विद्यालय



नव्या त्रिपाठी,
पुत्री श्री नवीन त्रिपाठी,
सहायक लेखाधिकारी

कितना अच्छा है मेरा विद्यालय,
हरा भरा है मेरा विद्यालय।
विद्यालय पहुँच हम प्रार्थना हैं करते,
यह हमें अनुशासित जीवन हैं देते।
शिक्षक हमको हैं सिखाते,
कभी न रूकते, कभी न थकते।
हम शिक्षक की आज्ञा का है पालन करते,
नई–नई गतिविधियाँ हैं करते।
परीक्षा जब नजदीक है आती,
पढ़ने में हम लग है जाते।
कितना अच्छा है...



जीना आ गया



विक्रान्त कुमार,
सहायक लेखाधिकारी



खामोशी भी जब बोलती सुनाई दे
और भीड़ में भी तन्हाई सी,
तो समझ लेना जीना आ गया...

जब दुःख में भी सुख नजर आने लगे
और सुविधा और सुख में अंतर समझ लो
तो समझ लेना...

दूसरों की खुशी में खुशी नजर आये
और दुःख में दुःख,
तो समझ लेना....

राहों के कंकड़ फूल लगे
और क्षणिक सुखों से दूरी हो
तो समझ लेना....

बहती नदी की कल–कल में
जब जीवन गान सुनाई दे
तो समझ लेना....

जब अपनी कमी पहले दिखे
और साँसों में ब्रह्म नाद सुनाई दे,
तो समझ लेना....

"कहीं पे कजली कहीं तान उट्ठी बिर्हा की
हृदय में झाँक गया इक अनंग फिर यारो"
- गोपाल दास नीरज

रंग रूप



शिवम् लिल्हौरी "बानगी"
लेखाकार



जो पेड़ तन के खड़ा है
कल झुकेगा भी और
एक दिन गिरेगा भी
मगर धरती से लिपट के
मासूम फूलों की डालियां
फिर उठ खड़ी होंगी
मुस्कुराते हुए
और हमें समझाते हुए
कि जो आज है
कल वो फिर आयेगा
एक नए रंग
एक नए रूप
को अपनाएगा
मुकद्दर तो उसका भी
लिखा है बिखरने का
मगर अपने रुख से वो
और निखर जाएगा

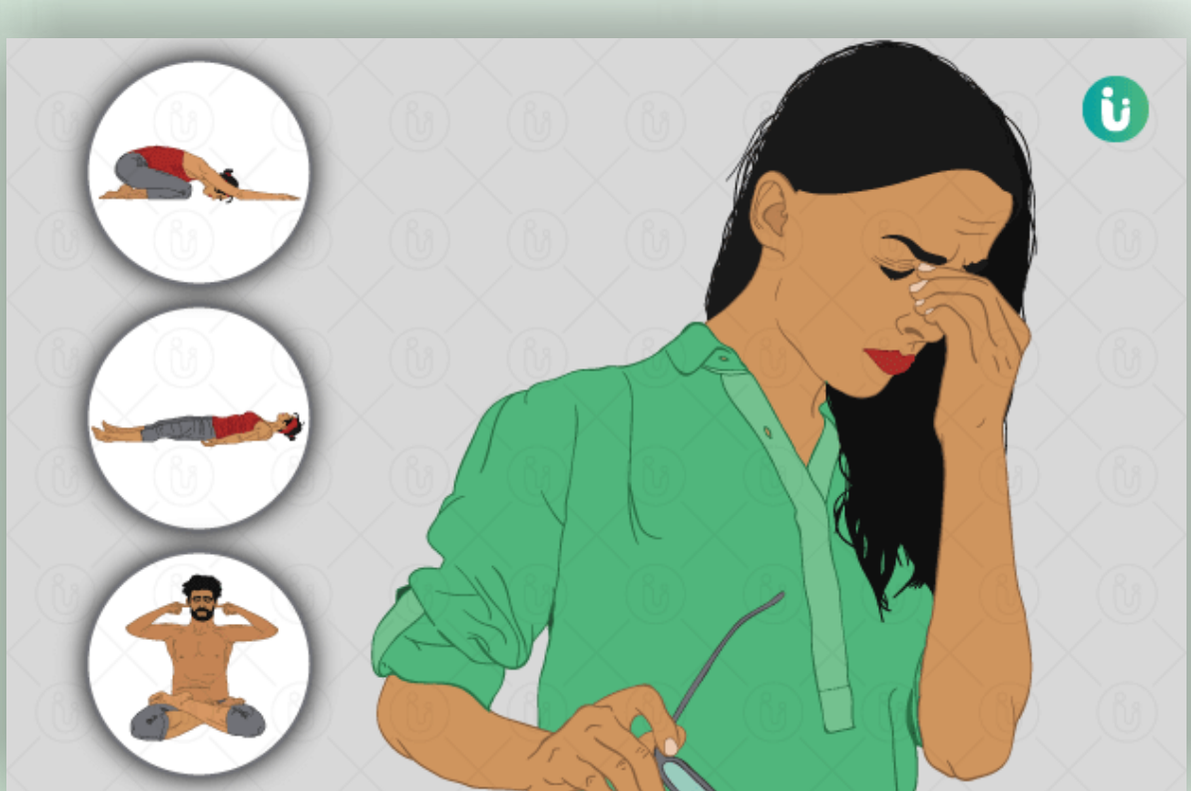
"तूँ तूँ करता तूँ भया, मुझ मैं रही न हूँ।
वारी फेरी बलि गई, जित देखौं तित तूँ"॥
- कबीर

तनाव



बबीता,
वरिष्ठ लेखाकार

आज की भाग–दौड़ भरी जिन्दगी में तनाव का होना निश्चित है। हम छोटी–छोटी चीजों पर टेंशन लेते हैं जैसे समय पर ऑफिस पहुँचना किसी चाहत को पूरा करना, अपनों तथा सगे संबंधियों के साथ अच्छे संबंध बनाने के लिए प्रयत्नशील रहते हैं आज कल तनाव हर प्राणी को उपहार में मिल रहा है, जैसे खाने के साथ अचार। बढ़ते तनाव को कम करना बहुत जरूरी है, यह हमारे शरीर को अन्दर से बिल्कुल खोखला कर देता है। तनाव के चलते व्यक्ति हर समय उदास या खालीपन महसूस करता है। तनाव ग्रस्त होने पर व्यक्ति को जिन चीजों में पहले आनंद आता था उनमें अब रूचि नहीं रहती। डिप्रेशन में नींद की समस्या महत्पूर्ण है या तो नींद कम आती है या बहुत अधिक आती है, इसी प्रकार भूख भी कम या बहुत अधिक लगती है, जिससे उसका स्वास्थ्य दिन प्रतिदिन खराब होता जाता है। तनाव में व्यक्ति हर समय थका हुआ और ऊर्जा की कमी महसूस करता है। डिप्रेशन में व्यक्ति को अपने बारे में काफी बुरे ख्याल आने लगते हैं जिससे वह डरा–डरा सहमा रहने लगता है साथ ही उसमें आत्मविश्वास कम हो जाता है, इसके चलते कभी –कभी व्यक्ति के मन में आत्महत्या का विचार भी घर कर लेता है। जबकि तनाव (टेंशन) हमारे जीवन में विपरीत प्रभाव डालती है,तनाव से हमारे मस्तिष्क और मन में अजीब सी उथल पुथल सी मची रहती है, जिससे क्रोध, चिड़चिड़ापन हमेशा बना रहता है। निरन्तर तनाव रहने से हमारा शरीर कई रोगों से ग्रस्त हो जाता है जैसे मधुमेह, मोटापा, हाईब्लडप्रेशर, थायरॉइड आदि इस प्रकार तनाव ग्रस्त रहते हुए शरीर में कार्य करने की क्षमता भी कम हो जाती है। अंततः आजकल भाग–दौड़ भरी जिन्दगी में तनाव मुक्त रहना किसी वरदान से कम नहीं है। तनाव मुक्त रहने के लिए प्रतिदिन समायोजन प्रक्रिया का प्रयोग किया जाना चाहिए, पूरे दिन में अपने लिए कुछ समय निकालकर व्यायाम, ध्यान, संतुलित आहार और पर्याप्त नींद लेनी चाहिए साथ ही जो मन करे वो काम करना चाहिए जिससे मन और तन तनाव मुक्त रहे, तनाव मुक्त रहने के लिए समझदार लोगों से गहरी बात न करें अपितु गहरे मित्रों से बेमतलब की बात करें इस प्रकार जीवन को तनाव मुक्त जियें।



तन्हा

प्रशांत जोशी,
वरि. लेखाकार



हम ताउम्र से दर्द सह रहे हैं,
तेरे होने पर भी तन्हा रह रहे हैं।
गलतियों का एहसास होने पर लगता है,
दर्द देने पर भी दर्द सह रहे हैं।
एक आहट से बचैन हो जाता हूँ,
उजाला होने पर भी अंधेरा पाता हूँ।
जिन्दगी का दर्द सहा नहीं जा रहा,
वह पास है मेरे पर दूर पा रहा।
गलतियों को बयां कर दे रहा,
अब घुटन में जी नहीं पा रहा।



"देवों की विजय, दानवों की
हारों का होता-युद्ध रहा।
संघर्ष सदा उर-अंतर में जीवित
रह नित्य-विरूद्ध रहा"।
- कामायनी/ जयशंकर प्रसाद

अपना सा...



विक्रान्त कुमार,
सहायक लेखाधिकारी



एक क्षण में जो इत्र सा महका गया,
हवा में चहुँ ओर महक बरसा गया।
था जो समाया मेरी रग–रग में,
बन बादल सब रंग बरसा गया।

आस थी जिसके मिलन की,
पास आकर भी ठुकरा गया।
कदम मिलाकर चला था जो संग मेरे,
कुछ अजनबी सा मुझे बना गया।

बात मानो या सुनो मन की,
हर क्षण ये हलचल से लगी है।
गैर कैसे मान लूं उसे मैं,
जो मन के अंतर्नाद में समा सा गया।

मीरा के कान्हा की तरह,
यूँ तो हर क्षण पास है मेरे।
बस राधा के कृष्णा की तरह,
विरह का गीत सुना सा गया।

'कृष्ण के प्रेम का प्याला है ये
रणधार से प्यार को पी गई मीरा
राधा को कृष्ण की देह मिली
बिन देह के नेह निभा गई मीरा'
- डॉ कुमार विश्वास

एक्सचेंज–ट्रेडेड फंड (ईटीएफ)



एस.जे.रॉय चौधरी,
पर्यवेक्षक



एक्सचेंज–ट्रेडेड फंड (ईटीएफ), म्यूचुअल फंड जैसा ही एक निवेश फंड है, जो कई तरह के अंतर्निहित आस्तियों (Underlying Assets) पर आधारित हो सकता है। ईटीएफ को कोमोडिटीस, सेक्टर्स, व्यक्तिगत शेयर, शेयरों की बास्केट या बॉडस के मूल्य को ट्रैक करने के लिए बनाया जाता है। अमेरिका के प्रतिभूति बाजारों में क्रिप्टो, व्यक्तिगत शेयर तथा मुद्रा आधारित ईटीएफ, लीवरेज्ड तथा इनवर्स ईटीएफ, कवर्ड कॉल बेस्ड ईटीएफ, साप्ताहिक लाभांश वितरण ईटीएफ आदि विभिन्न प्रकार के ईटीएफ भी उपलब्ध हैं जो भारतीय प्रतिभूति बाजारों में उपलब्ध नहीं हैं।

म्यूचूअल फंड्ज के विपरीत, ईटीएफ को व्यक्तिगत शेयरों की तरह ही किसी एक्सचेंज पर ट्रेड किया जा सकता है। ये आमतौर पर पैसिवली (passively) प्रबंधित होते हैं। ईटीएफ की मूल्य और अस्थिरता (Volatility) उसके अंतर्निहित आस्तियों (Underlying Assets) पर निर्भर करती है। निवेशक ईटीएफ का उपयोग दीर्घकालिक और अल्पकालिक निवेश, विविधीकरण या अपने पोर्टफोलियो के जोखिम को हेज करने के लिए कर सकते हैं।

ईटीएफ में निवेश क्यों करें

कभी आपने सोचा है कि सचिन तेंदुलकर, महेंद्र सिंह धोनी, रोहित शर्मा जैसे मशहूर हस्तियाँ म्यूचूअल फंड्ज के विज्ञापन क्या सिर्फ आम निवेशक को जागरूक करने के लिए मुफ्त में करते हैं? म्यूचूअल फंड सर्विस प्रदान करने वाली कम्पनियाँ अपने स्टाफ के वेतन एवं अन्य सुविधाएं तथा अपने इन्फ्रास्ट्रक्चर पर करोड़ों रुपये खर्च करते हैं। यह रकम कहाँ से आता है ? जरा सोचिए !!!

ईटीएफ में प्रबंधन शुल्क, विज्ञापन तथा निकासी शुल्क (exit load) जैसे शुल्क नहीं लगते, इसलिए ये म्यूचुअल फंड की तुलना में सस्ते होते हैं। म्यूचुअल फंड के विपरीत, जो केवल दिन में एक बार प्रतिभूति बाजार बंद होने के बाद ट्रेड होता है, ईटीएफ पूरे दिन एक्स्चेंज पर ट्रेड किए जाते हैं तथा म्यूचुअल फंड की तुलना में अधिक तरल (liquid) और लचीले (flexible) होते हैं। ईटीएफ में मूल्य आधारित एसआईपी बनाई जा सकती है जो अल्पकालिक मूल्य में उतार–चढ़ाव को प्रभावी ढंग से अधिकृत कर सकता है। अतः ईटीएफ में निवेश म्यूचूअल फंड्ज में निवेश से बेहतर विकल्प हो सकता है।

निवेश करने के लिए ईटीएफ का चयन कैसे करें

ईटीएफ के विवरण NSE India की वेबसाइट पर उपलब्ध हैं। कुछ अच्छे ईटीएफ की सूची, जिनमें अधिक तरलता (लिक्विडिटी) है, नीचे दी गई है

ETF	अंतर्निहित आस्तियाँ
NIFTYBEES	NIFTY 50 INDEX
BANKBEES	BANK NIFTY
JUNIORBEES	JUNIOR NIFTY INDEX
MAFANG	NYSE FANG+INDEX (Top 10 US Tech stocks)
ALPHA	NIFTY ALPHA 50 INDEX
SMALLCAP	NIFTY SMALL CAP 250 INDEX
HDFCSML250	NIFTY SMALL CAP 250 INDEX
LTGILTBEES	8-13 Yrs G-SEC INDEX
GOLDBEES	GOLD
SILVERBEES	SILVER

ईटीएफ चुनने का सबसे महत्वपूर्ण पहलू तरलता (Liquidity) है । जिस ईटीएफ में निवेशक निवेश करना चाहता है, उसका दैनिक व्यापार मात्रा अधिक होनी चाहिए ताकि उसे आसानी से खरीदा और बेचा जा सके। दूसरी सबसे महत्वपूर्ण पहलू ईटीएफ की अंतर्निहित संपत्ति (Underlying Asset) है। एक जोखिम से बचने वाला (रिस्क–अवेर्स) निवेशक तथा एक मध्यम जोखिम लेने वाला निवेशक NIFTYBEES या BANKBEE जैसे कम–अस्थिरता (Volatility) वाले ईटीएफ को चुन सकता है। एक अधिक जोखिम लेने वाला निवेशक SMALLCAP, HDFCSML250, ALPHA या MAFANG जैसे उच्च अस्थिरता (Volatility) वाले ईटीएफ में निवेश कर सकता है। ईटीएफ का चुनाव पूरी तरह से निवेशक की जोखिम लेने की क्षमता पर निर्भर करता है। अस्थिरता (Volatility) एक दुधारी तलवार है। यदि सावधानी से निवेश किया जाए तो अस्थिरता बेहतरीन रिटर्न दे सकता है परंतु असावधानी की स्थिति मे बड़े नुकसान भी दे सकता है।

ईटीएफ में निवेश कैसे करें

म्यूचुअल फंड में निवेश करने का एक लोकप्रिय तरीका सिस्टमेटिक इन्वेस्टमेंट प्लान (एसआईपी) है। परंतु ईटीएफ में एसआईपी सुविधा उपलब्ध नहीं है। म्यूचुअल फंड में एसआईपी के माध्यम से निवेश आवधिक होता है और मूल्य आधारित नहीं होता है और म्यूचुअल फंड के अधिग्रहण की लागत (cost of acquisition) को कम करने के लिए किया जाता है । परंतु पूर्व एसआईपी दिनांक एवं आगामी दिनांक के मध्यवर्ती अंतराल के दौरान मूल्य में उतार–चढ़ाव को एसआईपी में अधिकृत (कैप्चर) नहीं किया जा सकता है ।



उदाहरण के तौर पर, यदि MAFANG ईटीएफ में प्रत्येक माह के एक तारीख को एसआईपी किया गया होता तो MAFANG ईटीएफ 1 अप्रैल 2025 को तथा 1 मई 2025 को लगभग 120 रु० में क्रय होता। परंतु 1 अप्रैल 2025 तथा 1 मई 2025 के मध्यवर्ती अंतराल में (7 अप्रैल 2025 को)) MAFANG ईटीएफ का मूल्य 100 रु० हो गया था। म्यूचुअल फंड एसआईपी के द्वारा यह गिरावट अधिकृत नहीं किया जा सकता था परंतु ईटीएफ में मूल्य आधारित एसआईपी से इस गिरावट का लाभ उठाया जा सकता था। यह रणनीति म्यूचुअल फंड में एसआईपी की तुलना में अधिग्रहण की लागत को कम करने में कहीं अधिक प्रभावी हो सकता है, चाहे वह अल्पकालिक निवेश हो या दीर्घकालिक।

कोमोडिटीस, सेक्टर्स, सूचकांक एवं बॉडस के मूल्य साइक्लिकल होते हैं। यदि इन साईकिल्स को ध्यान में रखते हुए, ज्यामितीय या अंकगणितीय ग्रिड–आधारित एसआईपी–लाभ बुकिंग प्रणाली ईटीएफ में लागू किया जाए तो यह न केवल औसत–से–अधिक लाभ उत्पन्न करने में निवेशक के लिए फायदेमंद साबित हो सकता है परंतु विविधीकरण एवं मूल्य–औसतीकरण के माध्यम से जोखिम को भी नियंत्रित करने में प्रभावी हो सकता है।

अस्वीकरण

म्यूचूअल फंड तथा ईटीएफ निवेश बाजार जोखिमों के अधीन है। योजनाओं की NAV, ब्याज दरों में उतार–चढ़ाव सहित प्रतिभूति बाजार को प्रभावित करने वाले शक्तियों के आधार पर ऊपर–नीचे होते हैं। लेखक सेबी पंजीकृत ऐनलिस्ट नहीं है। लेख में दी गई जानकारी लेखक की निजी राय है जो केवल शैक्षिक और सूचनात्मक उद्देश्यों के लिए है। इस लेख में दी गई जानकारी के उपयोग या उस पर निर्भरता से उत्पन्न होने वाले किसी भी वित्तीय नुकसान, क्षति या परिणाम के लिए लेखक उत्तरदायी नहीं हैं। पाठक द्वारा किया गया कोई भी निवेश या वित्तीय निर्णय उनके अपने जोखिम पर होता है, और उनको अपनी वित्तीय परिस्थितियों पर सावधानीपूर्वक विचार करना चाहिए और कोई भी कार्रवाई करने से पहले किसी योग्य पेशेवर से सलाह लेनी चाहिए।

आसमानी मछलियाँ



शिवम सिंह,
खण्डीय लेखाधिकारी

मुझे आसमान के नीले कैनवास पर गोते लगाती रंग–बिरंगी पतंगें, लघु–चित्रों सी मालूम पडती हैं, जिन्हें धागे के ब्रश से सहज ठुनकियों द्वारा उकेरा गया होता है। आज भी जब मौका मिलता है तो अपनी बालकनी में खड़े हुए उडती पतंगों को निहार लिया करता हूँ। धागे के एक सिरे को थामे, नन्हें पतंगबाजों के चेहरे की खुशी देखकर अपनी पतंगबाजी के दिन याद आ जाते हैं। जब पापा कहा करते थे कि 'अगर ये लडका पतंग का साथ छोड़ दे तो जिंदगी में कुछ कर सकता है नहीं तो भगवान ही मालिक है।''

वैसे मैं उतना अच्छा पतंगबाज न था। पतंग उड़ाने से कहीं ज्यादा मुझे कटी पतंग लूटना भाता था। कटी पतंग आसपास दिखी नहीं कि मेरे पैर रूकते न थे। तब तक पीछा करता जब तक कि वह पतंग किसी और ने ना पकड़ ली हो या वह किसी अहाते या छत पर ना चली जाए। कटी पतंगें भी न जाने उन्हीं घरों में क्यों चली जाती हैं जहाँ उन्हें उडाने वाला कोई नहीं होता। बस बेकद्री में रात की ओस में पड़े–पड़े फट जाने के लिए। कितना विषादपूर्ण है यह....आसमां में कुलाँचे मारने वाली पतंग का नीचे गिरना और गिर कर हमेशा के लिए वहीं पड़े–पड़े गल जाना। पतंग लूटने की कला में सदा से सिद्ध हस्त था–लुट्टन गिरोह। जब पूरा देश पतंग उड़ाकर त्यौहार मनाता है तो ये पतंग लूटकर मनाया करते। परम्पराएँ त्यौहार देती हैं पर उसे कैसे मनाना है ये आर्थिक स्थितियाँ तय करती हैं। बड़ी–बड़ी कँटीली झाडियाँ उचकाते हुए गिरोह के सदस्य बच्चे नंगे पैर, मैले कुचले कपडे पहने झुंड में कॉलोनी की गलियों में घूमा करते थे। आसमानी मछलियों को दबोचने के लिए कँटीली झाड़ियाँ घुमाते–उचकाते ये लड़के मुझे देवदूत सरीखे मालूम पड़ते थे। इनकी नजर सदैव आकाश में गोते लगाती रहती थी और जमीनी रास्ते आसमान में उड़ती रंग–बिरंगी पतंगें तय किया करती थीं।

वो भी एक दौर था जब स्कूल से घर पहुँचते ही पतंग–परेती लेकर छत पर तैनात हो जाते। पलक झपकते ही रंगीन कागजों से हवाओं की दोस्ती और प्रगाढ़ हो जाया करती थी। उन दिनों शाम के समय में पूरा आसमान पतंगमय हो जाया करता था। यह वो जमाना था जब पतंगें हवा में ही लूट ली जातीं। 'एक अनार सौ बीमार' वाली भीड़ उन्हें सिर–आँखों पर बिठाए जमीन पर गिरने नहीं देती। हाथों–हाथ ही पतंग के नए स्वामी का फैसला हो जाता। विभिन्न कँटीले हथियारों से लैस और पतंग के पीछे अपना तन–मन–जीवन सब कुछ दाँव पर लगाकर दौड़ने वाले प्रखर लुट्टनो के बीच दौड़कर, ज्यादातर मुझे निराशा ही हाथ लगती; पर मेरे लिए कटी हुई पतंग लूटने के लिए दौड़ने में जो मजा था वह उड़ाने में कहाँ ?

लगभग दस साल बाद संक्रांति में घर आया था। न उतनी पतंगें थीं और न ही उसे लूटने वाले। शाम को सब्जी के ठेले पर खड़े लोगों के बीच स्थान बनाते हुए मैं भी एक हाथ में झोला पकड़े हुए दूसरे हाथ से टमाटर छाँटने लगा। रेट पूछने के लिए सिर उठाया तो ठेले के उस पार एक जाना–पहचाना सा चेहरा दिखा। एक बार को लगा कि इसे पहचानता हूँ पर बहुत जोर देने पर भी कुछ याद नहीं आया। तब तक कोई बोला–''दीपू फटाफट एक किलो आलू तौल दो।'' दीपू सुनते ही आँखों के सामने एक पूरा दौर कौंध गया। एक बार को सहसा यकीन ही नहीं हुआ कि यह वही दीपू है जिसके इशारे पर कभी पतंगें नाचा करती थीं। उसके सिर के बाल गिर गये थे। उम्र से ज्यादा बूढ़ा दिखाई दे रहा था।

आखिर मैं दीपू को कैसे भूल सकता था। उन दिनों दीपू से अच्छा पतंगबाज कोई था ही नहीं और पतंग लूटने में तो उसे महारथ हासिल थी। वह पतंग कटने के बाद थोड़ी देर तक उसके साथ खेतों, अधबने मकानों के बीच से दौड़ता और आखिर में एक जगह जाकर खड़ा हो जाता था। पतंग ठीक उसके पास आकर ही गिरती। ऐसा लगता मानो शुरू में वो कटी पतंग का और बाद में कटी पतंग उसका पीछा करती। वायु का वेग, पेंच का एँगल, पतंग का मिजाज के बीच के गणितीय समीकरण को दीपू हल कर चुका था। वह अपने इलाके का बेताज बादशाह था। सब जानते थे कि अगर पतंग के पीछे दीपू दौड़ जाए तो किसी और के दौड़ने का कोई लाभ नहीं।

एक बार की बात है। काफी पीछे से बड़ी पान–मार पतंग कटकर बहुत ऊँचा बही चली आ रही थी। बड़ी पतंग और लंबा धागा होना तय था। सबकी नजरें जम चुकी थीं। लुट्टन गिरोह के साथ–साथ प्रत्येक पतंगबाज उसे पाना चाहता था। दीपू के दौड़ने के बावजूद भी सब दौड़े। हर कोई उसे लूट लेना चाहता था। आस–पास के छतों पर भी लोग नजरें टिका के देखने लगे कि आखिर ये किसके हाथ लगती है। नजरें ऊपर हवा में और पैर झाड़ी खेतों से होते गुजर रहे थे। पर यह क्या दीपू बीच में ही रूक गया। बाकी टोली सकपकाई पर कारण जानने का समय किसी के पास नहीं था। कटी पतंग बहती चली जा रही थी। जितनी दूर भी टोली जाती लगता की पतंग उतनी ही दूर है। आखिर में टोली हताश हो गई। इतने में सबने देखा कि पतंग वापस हवा में ऐसे उड़ने लगी मानो कटी ही न हो। पतंग कटी तभी तक होती है जब तक उसका धागा किसी के हाथ में न हो। दीपू वहीं से हँसते हुए पतंग उड़ा रहा था। उस दिन के बाद से सम्पूर्ण पतंगबाज समूह में दीपू का एक सम्मानित स्थान उच्चतम मान लिया गया। मैं तो कहता हूँ अगर पतंग लूटने का ओलंपिक होता तो दीपू का गोल्ड़ मैड़ल पक्का था।

आज भला दीपू मुझे क्यूँ पहचानता। लेकिन मैंने दीपू को पहचान लिया था। मुझे स्तब्ध खड़ा देख चहक कर बोला 'एकदम ताजी सब्जी है गुरू....सीधा खेत से लाया हूँ। मुझे लाल टमाटर में वही पान–मार पतंग नजर आ रही थी। मैं नजरें नीचे कर टमाटर उठाने लगा।

(शिवोहम, बादल, पर्वत और जुगनू में संकलित)



कल्याण अनुभाग

क्रिकेट





- नॉर्थ जोन (IA&AD) क्रिकेट प्रतियोगिता दिनांकः 10.03.2025 से 13.03.2025 तक चंडीगढ़ में आयोजित की गई। इसमें संजीव ज़खमोला (कोच), सन्नी राणा, वैभव भट्ट, शुभम नेगी, ने खिलाड़ी के रूप में प्रतिभाग किया।
- RSB क्रिकेट प्रतियोगिता दिनांकः 13.03.2025 से 20.03.2025 तक दिल्ली में आयोजित की गई, जिसमें सन्नी राणा (कप्तान) संजीव ज़खमोला, वैभव भट्ट, शुभम नेगी ने खिलाड़ी के रूप में उत्तराखंड सिविल सर्विसेज की टीम से प्रतिभाग किया।
- वैभव भट्ट ने जनवरी माह में उत्तराखंड रणजी टीम के खिलाड़ी के रूप में प्रतिभाग किया।

बैडमिंटन



- YONEX ऑल इंडिया मास्टर RANKING प्रतियोगिता पंचकुला हरियाणा में दिनांकः 21.01.2025 से 28.01.2025 तक आयोजित की गई। जिसमें श्रीमती शिखा खण्डूरी 50 प्लस (वेटरन वर्ग) में तृतीय स्थान प्राप्त किया।
- YONEX 47जी (इंडियन मास्टर) वेटरन वर्ग नेशनल बैडमिंटन चैंपियनशिप दिनांकः 16.03.2025 से 23.03.2025 तक गोवा में आयोजित की गई, जिसमें श्रीमती शिखा खण्डूरी क्वार्टर फाइनल तक खेलीं।

टेबिल टेनिस



- श्री राकेश कुमार द्वारा दिनांक 16.01.2025 से 20.01.2025 तक मास्टर नेशनल CAG टीम हेतु प्रतिभाग किया। प्रतियोगिता जयपुर राजस्थान में आयोजित की गई।
- दिनांकः 17.02.2025 से 23.02.2025 तक इंदौर में खेली गई प्रतियोगिता में CAG टीम हेतु प्रतिभाग किया।
- दिनांकः 16.03.2025 से 20.03.2025 तक ऑल इंडिया सिविल सर्विस प्रतियोगिता में प्रतिभाग किया।

विश्व हिन्दी दिवस – 2025











महालेखाकार महोदय के स्थानान्तरण पर आयोजित विदाई समारोह









कार्यालय परिसर में क्रिकेट टर्फ उद्घाटन





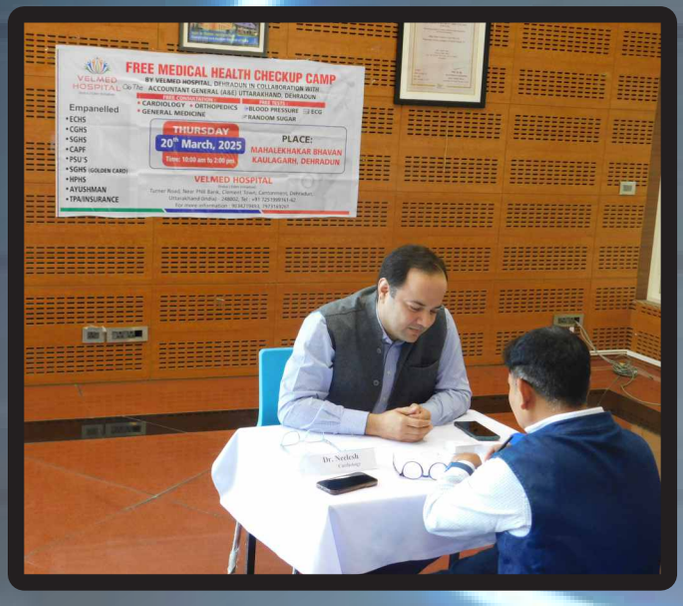


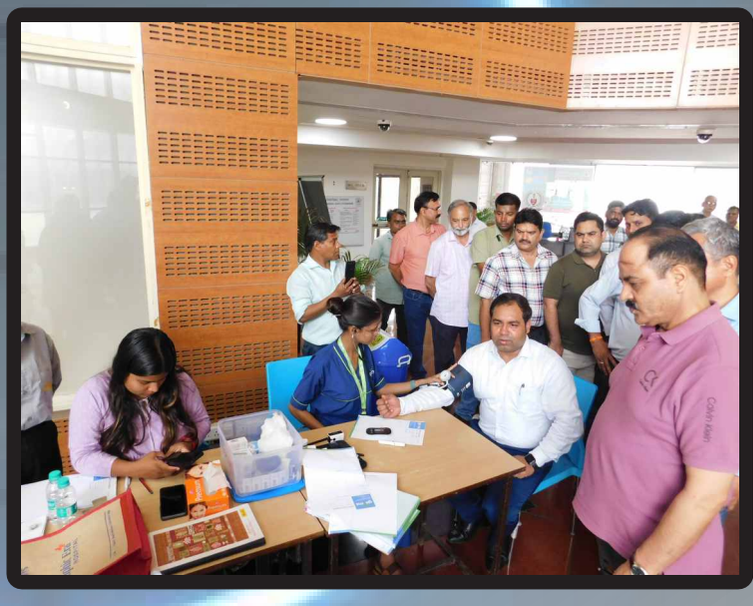


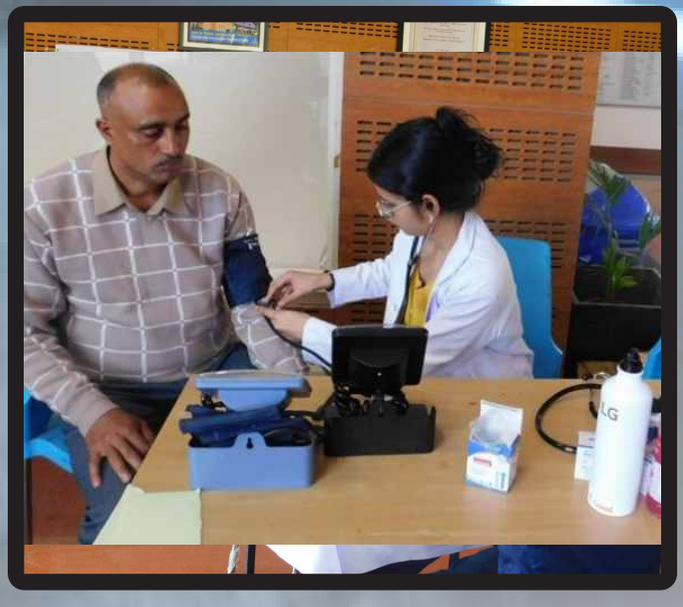


चिकित्सा शिविर


FREE MEDICAL HEALTH CHECKUP CAMP
BY VELMED HOSPITAL, DEHRADUN IN COLLABORATION WITH
ACCOUNTANT GENERAL (A&E) UTTARAKHAND, DEHRADUN


FREE MEDICAL HEALTH CHECKUP CAMP
BY VELMED HOSPITAL, DEHRADUN IN COLLABORATION WITH
ACCOUNTANT GENERAL (A&E) UTTARAKHAND, DEHRADUN
Empanelled
• ECHS
• CGHS
• SGHS
• CAPF
• PSU'S
• SGHS (GOLDEN CARD)
• NPHS
• AYUSHMAN
• TPA/INSURANCE
• CARDIOLOGY • ORTHOPEDICS • BLOOD PRESSURE • ECG
• GENERAL MEDICINE • RANDOM SUGAR
THURSDAY
20th March, 2025
PLACE:
MAHALEKHAKAR BHAVAN
KAULAGARH, DEHRADUN
VELMED HOSPITAL







वर्ष 2025 के दौरान सेवानिवृत्ति



श्री रमेश सिंह बरफाल, वरि. खंडीय लेखाधिकारी
दिनांकः 31.01.2025



श्रीमती शमलेश देवी, बहुकार्यकर्मी
दिनांकः 31.01.2025



श्री रघुबीर सिंह राणा, वरि. खंडीय लेखाधिकारी
दिनांकः 31.01.2025



श्री संजय कौल, वरि. लेखाकार
दिनांकः 28.02.2025



श्री पूरण कृष्ण कौल, वरि. लेखाधिकारी
दिनांकः 30.04.2025



श्री संजीव कुमार, वरि. लेखाधिकारी
दिनांकः 30.06.2025

गणतंत्र दिवस – 2025












कार्यस्थल पर महिला यौन उत्पीड़न संबंधी व्याख्यान



हिन्दी कार्यशाला





अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 2025













मो. परवेज़ आलम, महालेखाकार (ले०एवं हक०) उत्तराखण्ड, श्री संजीव कुमार को महालेखाकार (लेखापरीक्षा) उत्तराखण्ड का कार्यभार सौंपते हुए

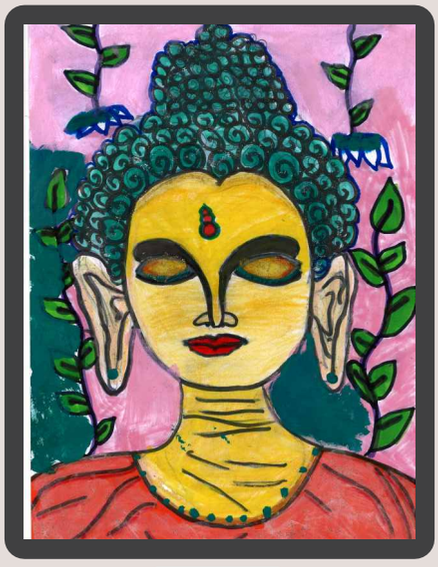




चित्र प्रतिभा



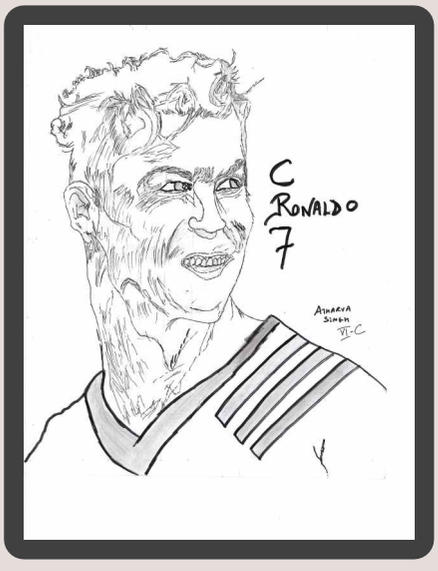
नव्या त्रिपाठी
पुत्री श्री नवीन त्रिपाठी, सहायक लेखाधिकारी



सान्वी लिल्हौरी
पुत्री शिवम् लिल्हौरी, लेखाकार



विहान पाराशर
पुत्र सुश्री पूनम शर्मा, सहायक निदेशक, (राजभाषा)



अथर्व सिंह
पुत्र श्री शिवम् लिल्हौरी, लेखाकार



यशपाल सिंह
पिता श्रीमती दीपा पंवार, सहायक लेखाधिकारी



पलक
पुत्री श्री विक्रान्त कुमार, सहायक लेखाधिकारी



अम्बिका
पुत्री श्री विक्रान्त कुमार, सहायक लेखाधिकारी


भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक
COMPTROLLER & AUDITOR GENERAL OF INDIA
सत्यमेव जयते
SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
उत्तराखण्ड, देहरादून